Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

गलियार गधो घोड़ो अविनीत ते,
कुट्यां बिन आगो न चाले।
ज्यूं अविनीत नें काम भलावियां,
कह्यां नीठ नीठ पार घाले।।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 05 • 04 नवम्बर- 10 नवम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-11-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

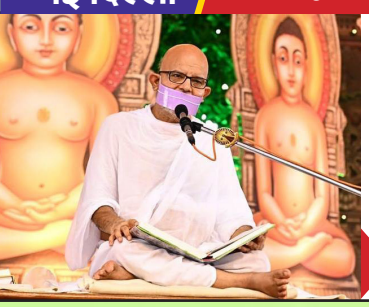

आसक्ति के बिना अच्छे भाव से किया गया पुरुषार्थ होता है उत्तम : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति की साधना है दीक्षा : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 11

Address Here

वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने का माध्यम बन सकता है प्रेक्षाध्यान : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
28 अक्टूबर, 2024

वीतराग कल्प आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि पाश का विमोचन करो, पाश से मुक्त हो जाओ। पाश का अर्थ है बंधन। अगर कोई व्यक्ति जाल में फंसा हो और निकल आए, तो वह बंधन से मुक्त हो जाता है। माया के जाल रूपी पाश से निकल जाना चाहिए। स्नेह पाश अत्यधिक भयंकर होते हैं। राग आदि के कारण व्यक्ति बंधन में फंस जाता है। अवांछनीय राग भी एक पाश है, जो साधना के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है।

पदार्थों के प्रति राग साधना के क्षेत्र में छोड़ने योग्य होता है। ममता, स्नेह और मोह बंधन हैं, जिन्हें कम करना आवश्यक है। प्रेक्षाध्यान का अभ्यास वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने का एक माध्यम बन सकता है, जिसमें न कोई प्रियता होती है, न ही अप्रियता। वीतराग बनने पर मोह समाप्त हो जाता है। भगवान महावीर केवलज्ञानी बन गए तो उनके मन में गौतम स्वामी के प्रति भी मोह नहीं

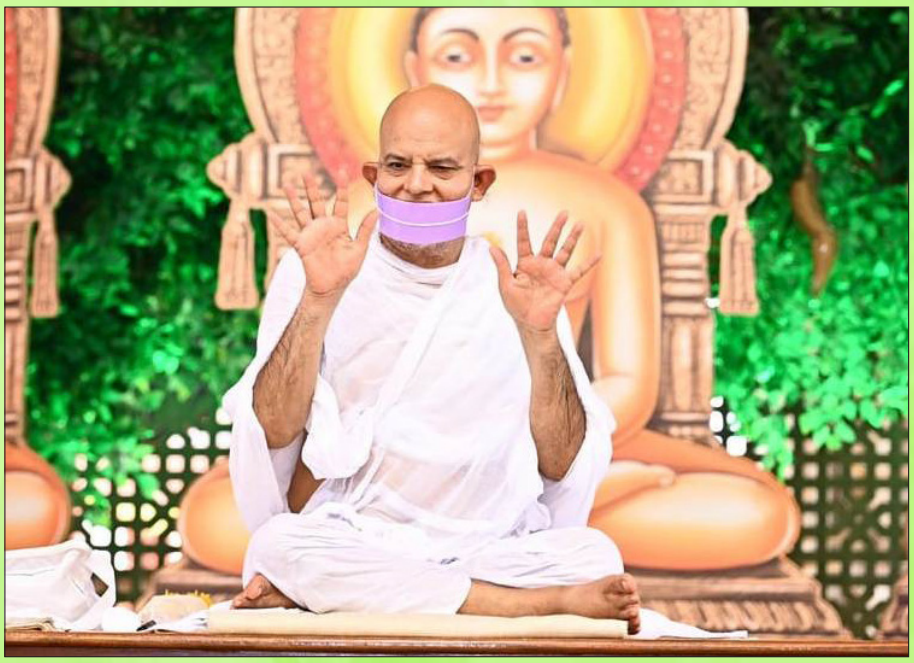

रहा। गौतम स्वामी के मन में मोह आ गया था, लेकिन वे संभले और उन्हें भी कैवल्य की प्राप्ति हो गई। राग-द्वेष बंधन होते हैं, और अनित्य अनुप्रेक्षा के माध्यम से इनसे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया - आयारो में कहा है कि व्यक्ति प्रेमानुबंध से मुक्त हो। दसवें गुणस्थान तक राग और मोह रहते हैं, लेकिन इसके बाद वीतरागता आती है। मुमुक्षु जीवन में संयम के प्रति निष्ठा, अपने नियमों के प्रति जागरूकता और स्वाध्याय का भाव होना चाहिए। ध्यान साधना में प्रवृत्त रहना और समिति-गुप्ति का अभ्यास करना चाहिए। जहां राग है वहां द्वेष भी होता है। द्वेष की पृष्ठभूमि में राग ही होता है। यदि राग न रहे तो द्वेष टिक ही नहीं सकता। इसलिए आदमी को ऐसे पाशों का विमोचन करने का प्रयास करना चाहिए। राग-राग में भी बड़ा अंतर होता है। गुरु के प्रति भक्ति रूपी राग और पदार्थों के प्रति राग भिन्न होते हैं। छठे और दसवें गुणस्थान के राग में भी अंतर होता है। गुरु और संघ के प्रति होने वाला राग भिन्न होता है, यह राग प्रशस्त भी हो सकता है।

पूज्य सन्निधि में 23वें अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन समारोह आयोजित हुआ। विगत सात दिनों से 23वें अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर के अंतर्गत रूस, यूक्रेन, जापान, वियतनाम, भारत और बेलारूस से 44 शिविरार्थी पूज्य सन्निधि में प्रेक्षाध्यान साधना में लगे हुए थे। प्रेक्षा इंटरनेशनल के मंत्री गौरव कोठारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। यूक्रेन, जापान, रूस और वियतनाम के प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी। (शेष पेज 10 पर)

पूर्णतया परमार्थ को समर्पित है मोक्ष के इच्छुकों की पारमार्थिक शिक्षण संस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

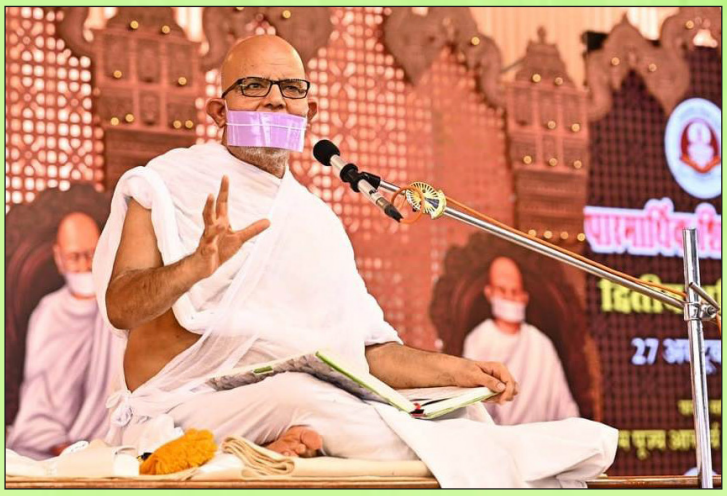

सूरत।
27 अक्टूबर, 2024

परम पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फ़रमाया कि जीवों के कर्म बंधन और उनके कर्मों के परिणाम को जानना आवश्यक है। प्राणी दुःख और सुख का अनुभव करता है, इसके पीछे कारण कर्म ही होता है। 'आचारांग भाष्य' में कहा गया है कि कर्म ही दुःख का कारण है। भौतिक सुख भी कर्म के प्रभाव से ही प्राप्त होता है, और आध्यात्मिक सुख कर्म के विलय से प्राप्त होता है। आंतरिक सुख कर्म के निर्जरण से मिलता है, जिसके लिए संवर और निर्जरा की आवश्यकता होती है। ये तत्व परमार्थ से जुड़े हैं और इनसे परम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के द्वितीय अधिवेशन के सन्दर्भ में आचार्य प्रवर ने कहा कि पारमार्थिक शिक्षण संस्था ने 75 वर्षों का सफर तय कर लिया है। यह संस्था आचार्य तुलसी के समय से मुमुक्षुओं के मार्गदर्शन के लिए कार्य कर रही है। यह संस्था पूर्णतया परमार्थ को समर्पित है। यहां रहने वालों का उद्देश्य साध्वी, मुनि और समणी की दीक्षा के रूप में अपना कल्याण होता है। इसे मुमुक्षु संस्था भी कहा जा सकता है, यह मोक्ष के इच्छुकों की संस्था है। आचार्यश्री ने बताया कि उन्हें भी गुरुदेव तुलसी के समय में इस संस्था से जुड़ने का अवसर मिला था और उन्हें संस्कृत व्याकरण पढ़ाने का कार्य भी सौंपा गया था।

मुमुक्षु पुरुष भी इस संस्था से जुड़कर साधु बनते हैं। (शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

सुखद वृद्धावस्था के लिए करें पूर्व तैयारी : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
26 अक्टूबर, 2024

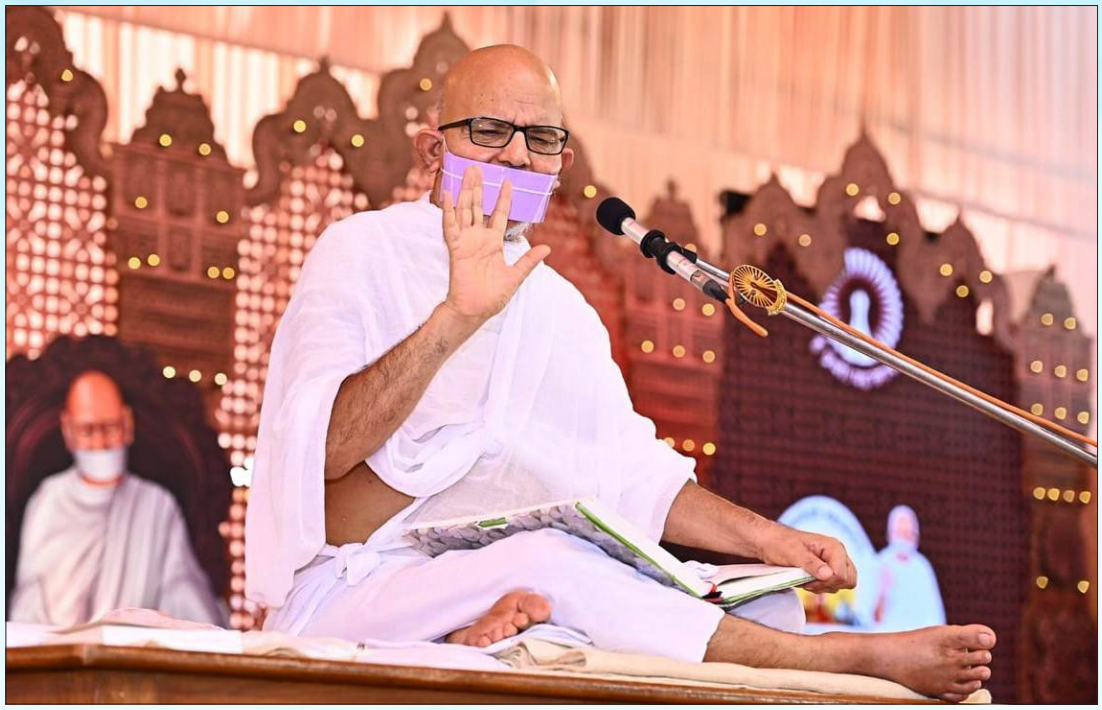

जिन शासन भास्कर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम वाणी की वर्षा करते हुए फ़रमाया कि प्राणी जन्म लेता है, जीवन जीता है और अंत में मृत्यु को प्राप्त होता है। मनुष्य जन्म लेता है, पहले गर्भ में रहता है, फिर बाहर आता है। यदि आयुष्य लंबा है, तो उसे बचपन, कैशौर्य, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था के अनेक चरणों से गुजरना पड़ता है। संक्षेप में, बचपन, जीवन, और बुढ़ापा सभी के जीवन का हिस्सा होते हैं।

बचपन का उपयोग कैसे किया जाए, युवावस्था में कैसे रहा जाए, इस पर विचार करना चाहिए। बचपन विद्यार्जन का समय है। चार आश्रमों की व्यवस्था के अनुसार, जीवन को चार भागों में बांटा गया है। विद्या प्राप्ति जीवन का महत्वपूर्ण कार्य है। विद्या के साथ अच्छे संस्कार भी जीवन में आ जाएं तो किशोरावस्था सफल हो सकती है। यह अर्जन और ग्रहण करने का समय है। युवावस्था का सदुपयोग करना आवश्यक है, क्योंकि इस अवस्था में गलत रास्ते पर चलने से पतन भी संभव है। कुछ लोग बाल्यावस्था में ही संन्यास का मार्ग अपना लेते हैं। विरक्ति आने पर संन्यास की ओर बढ़ जाना चाहिए।

यदि कोई युवावस्था में साधु बन गया है, तो धर्म प्रचार में लगना चाहिए, और गृहस्थ है तो सद्विचार और सदाचार का पालन करना चाहिए। प्रौढ़ावस्था में व्यक्ति स्थिरता प्राप्त करता है, और 70 वर्ष के बाद वृद्धावस्था का आरंभ होता है। इसके बाद वह धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यों में अपने जीवन को लगाता है। संन्यास का कुछ अंशों में पालन करते हुए जीवन शैली में परिवर्तन लाना चाहिए।

जन्म लेना, जीवन जीना और फिर एक दिन जीवन यात्रा का समापन होना - यह एक क्रम है। आत्मा शाश्वत है, जबकि शरीर नश्वर है। आत्मा पहले भी थी और आगे भी रहेगी। प्राणी एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। मृत्यु और जन्म के बीच एक ऐसी स्थिति बनती है, जिसके कारण पिछले जन्म की स्मृति समाप्त हो जाती है। ध्यान और योग की गहराई में जाकर पूर्वजन्म को देखा जा सकता है। बुढ़ापे की तैयारी पहले से करनी चाहिए ताकि वृद्धावस्था सुखद हो। वृद्धावस्था में ध्यान, तप, स्वाध्याय और संयम का अभ्यास करते रहना चाहिए। साधुजन भी वृद्धावस्था में सक्रिय रहकर सेवा में योगदान दे सकते हैं। बुढ़ापे को समझें और उसे स्वाभाविक रूप में स्वीकारें।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से संबद्ध विद्या भारती के महामंत्री अवनीश भटनागर ने पूज्यवर के दर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। सचिन ज्ञानशाला ने अपनी प्रस्तुति दी। संथारा साधिका स्व. मोहनीदेवी बरड़िया के जीवन पर आधारित पुस्तक 'जीवन झरमर' को उनके पारिवारिक सदस्यों द्वारा आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राग और द्वेष दो किनारे, पर मध्यस्थ रहने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
25 अक्टूबर, 2024

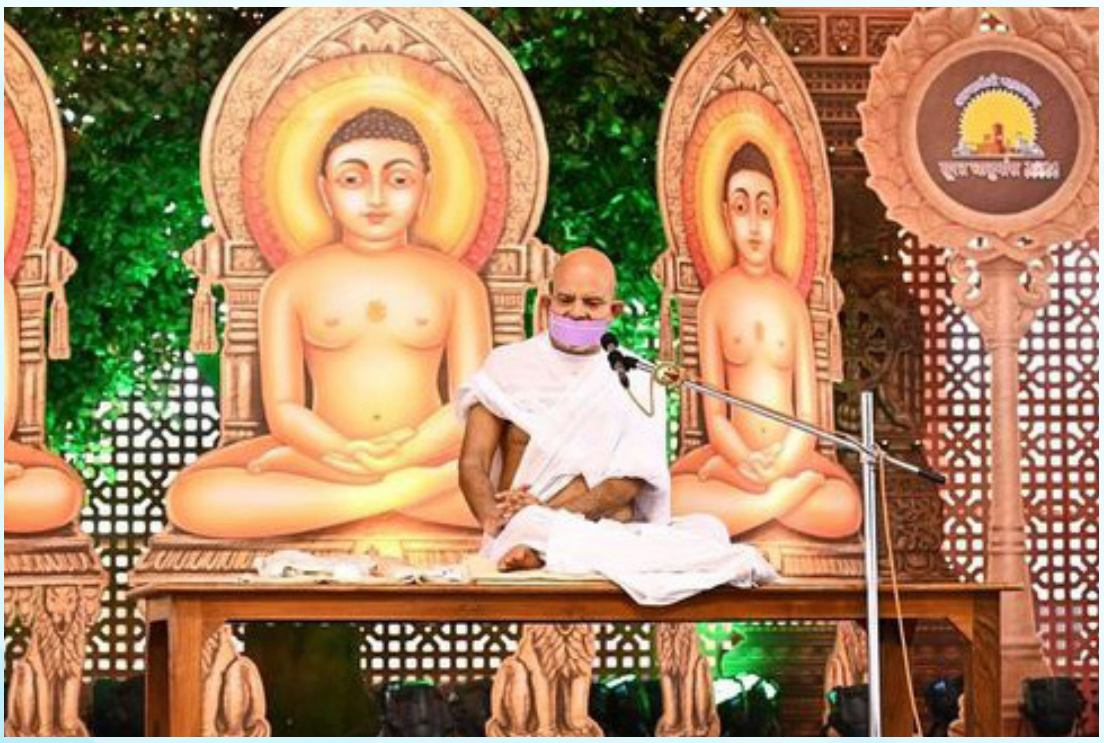

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' वाणी का निर्झर बहाते हुए फ़रमाया कि पाप कर्म और पुण्य कर्म, दोनों का बंध होता है। पाप कर्म के बंध का मुख्य कारण मोहनीय कर्म होता है। वहीं, पुण्य कर्म का बंध तब होता है जब मोहनीय कर्म का अभाव होता है और नाम कर्म के उदय से पुण्य कर्म का बंध हो जाता है। पुण्य कर्म के बंध के लिए मोहनीय कर्म का निष्प्रभावी होना आवश्यक है, चाहे वह क्षय या क्षयोपशम द्वारा हो।

राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। जब राग-द्वेष समाप्त हो जाते हैं, तो कर्म का बंध सर्वथा समाप्त हो जाता है या केवल नाम मात्र रूप में रहता है। वीतराग पुरुष में राग और द्वेष नहीं होते। मनोज्ञ शब्द, रूप आदि के कारण व्यक्ति राग में जा सकता है, और अमनोज्ञ शब्द, रूप आदि के कारण द्वेष में जा सकता है।

ग्यारहवें गुणस्थान का वीतराग उपशांत मोह वीतराग होता है, जिसमें राग पूरी तरह समाप्त नहीं होता और दुबारा उभर सकता है। उपशांत मोह वीतराग अस्थायी वीतराग होता है, जबकि क्षीण मोह वीतराग स्थायी वीतराग होता है। आठवें गुणस्थान से दो मार्ग निकलते हैं - उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी। उपशम श्रेणी का साधक आठवें से नौवें, दसवें और ग्यारहवें गुणस्थान तक जाता है लेकिन उससे आगे नहीं बढ़ सकता। वह ग्यारहवें से वापस नीचे आ जाता है, जैसे बंद गली में प्रवेश कर लौटना पड़ता है।

क्षपक श्रेणी का मार्ग अपनाने वाला साधु आठवें से नौवें-दसवें होते हुए ग्यारहवें को लांघकर बारहवें गुणस्थान में पहुँचता है। ग्यारहवें गुणस्थान का वह स्पर्श नहीं करता और आगे तेरहवें में केवलज्ञानी बन जाता है।

ग्यारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म का उदय नहीं होता और कोई बंधन नहीं होता, लेकिन भीतर मोहनीय कर्म की सत्ता बनी रहती है। जबकि क्षीण मोह वाले के पास मोहनीय कर्म की सत्ता नहीं रहती और वह हमेशा के लिए अमोह हो जाता है।

हमें भी राग-द्वेष को कमजोर करने का प्रयास करना चाहिए। मुमुक्षु और गृहस्थों को भी राग-द्वेष को कम करने का प्रयास करना चाहिए। पदार्थों के प्रति आकर्षण नहीं होना चाहिए और विरक्ति का भाव रखना चाहिए।

मन में समाधि का भाव होना चाहिए। दूसरों को दुःखी देखकर सुखी नहीं होना चाहिए और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी नहीं होना चाहिए। राग और द्वेष दो किनारे हैं। हमें मध्यस्थ रहना चाहिए, न राग की ओर झुकें, न द्वेष की ओर। जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियाँ आ सकती हैं, लेकिन हमें समता रखनी चाहिए। राग-द्वेष हमारे भीतर के संस्कार हैं। जैसे-जैसे भीतर धर्म की स्थिति मजबूत होती है, बाहरी पदार्थों के प्रति राग-द्वेष की भावना क्षीण होती जाती है।

किशोर मंडल और कन्या मंडल सूरत ने चौबीसी गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मस्तिष्क, मन और गणना की शक्ति का चमत्कार : अवधान

सूरत।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य और चारित्र आत्माओं के संग अवधान की रोमांचक प्रस्तुति, महाप्रज्ञ सभागार, संयम विहार, भगवान महावीर विश्वविद्यालय, सूरत में हुई।

इस अद्वितीय कार्यक्रम का आयोजन सूरत चातुर्मास व्यवस्था समिति के अंतर्गत, भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के साथ, तेरापंथ युवक परिषद सूरत और तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य सूत्रधार मुनि गौरव कुमार जी, मुनि हितेंद्र कुमार जी और मुनि जागृत कुमार जी थे, जिनके

अवधान के माध्यम से श्रावकों ने मस्तिष्क की अनंत क्षमताओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा और समझा।

निर्देशन में अवधान कार्यक्रम सम्पादित हुआ। हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया, विशेष उल्लेखनीय है कि 11,000 से अधिक लोगों ने इसे कार्यक्रम को JTN चैनल के माध्यम से लाइव देखा। मुनित्रय ने लगभग 3.30 घंटे में 100 अवधान प्रस्तुत किए, जिनमें मुनिश्री द्वारा 70 से अधिक वस्तुओं को याद कर सत्र के अंत में श्रावक समाज द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों के सटीक उत्तर दिए। इस अवधान के माध्यम से श्रावकों ने मस्तिष्क की अनंत क्षमताओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा और समझा। मुनित्रय ने इस अवसर पर स्मरण शक्ति को तीव्र करने के कुछ महत्त्वपूर्ण तरीकों को साझा किया और इस परंपरा को जीवित रखने की महत्ता पर भी जोर दिया।

इस अवसर पर सूरत चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, महामंत्री नानालाल राठौड़, उपाध्यक्ष अनिल चंडालिया, अंकेश भाई, डॉ. रमेश जैन आदि आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन गादिया द्वारा उपस्थित सभी श्रोताओं का वक्तव्य से अभिनंदन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन भव्य बोथरा और गणेश बम्ब द्वारा किया गया।

विघ्नहर ह्रीं कार अनुष्ठान का भव्य आयोजन

चिकमंगलूरु।

कर्नाटक के इतिहास में प्रथम बार एवं मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में चतुर्थ बार विघ्नहर ह्रीं कार अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् ,चिकमंगलूरु के तत्वावधान में हुआ। ह्रीं कार की आकृति में बैठकर अनुष्ठानकर्ताओं ने आचार्य सिद्धसेन द्वारा रचित कल्याण मन्दिर स्तोत्र का मुनि जयेश कुमार जी के भावपूर्ण संगान के साथ उच्चारण एवं श्रवण किया।

इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना से जुड़ी विशिष्ट चमत्कारी घटना का उल्लेख करते हुए कहा- प्रभु पार्श्वनाथ का माहात्म्य और प्रभाव तीर्थंकर परंपरा में अपना अलग विशिष्ट स्थान रखता है। उन पर रचित अनेक स्तोत्र भक्तों की आस्था के अनन्य केंद्र हैं। इन्हीं स्तोत्रों की कड़ी में एक महत्वपूर्ण नाम है कल्याण मंदिर स्तोत्र। इस स्तोत्र के रचयिता आचार्य सिद्धसेन एक क्रांतिकारी पुरुष थे। वे कहते थे मेरा जन्म सिर्फ अतीत के गीत गाने नही हुआ है, यदि मैं कुछ नया नही कर सकूं तो मेरा जीवन व्यर्थ है। ऐसी सोच वाले व्यक्ति द्वारा महान भक्ति काव्य की रचना कुछ अजीब लग सकती है। पर सिद्धसेन भक्ति विरोधी नही थे। उन्हें वह स्तुति पसंद थी जो अपने आराध्य के गुणों को आत्मसात करने का भाव जागृत करे, ना कि जो सिर्फ अपनी स्वार्थ सिद्धि का प्रयत्न हो। यह अनुष्ठान भी सभी के लिए विघ्न निवारक, सिद्धि दायक होने के साथ ही प्रभु पार्श्वनाथ के गुणों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करने वाला बने यह काम्य है। अनुष्ठान का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मुनि भव्य कुमार जी ने पार्श्व स्तुति में गीत का संगान कर अनुष्ठान के क्रम को आगे बढाया।

अनुष्ठान के दौरान ह्रीं का पिरामिड प्रत्येक सदस्य के सिर पर शक्ति का केन्द्रीकरण कर रहा था। ह्रीं कार अनुष्ठान में 101 जोड़ों की सहभागिता उनकी साधना के उत्साह को मुखर कर रही थी।

चिकमंगलूरु के इतिहास में ऐसा उपक्रम सम्पूर्ण नवीनता एवं आध्यात्मिकता लिए हुए प्रथम बार हुआ। कार्यक्रम की सफल आयोजना में तेयुप अध्यक्ष जयेश गादिया, मंत्री राकेश कावड़िया, लाजवंत गादिया, नीलेश डोसी, अशोक डोसी, राहुल गादिया, जागृत डोसी, अभिषेक आच्छा, दीपक दुगड़, नितेश नाहर एवं ह्रीं आकृति निर्माण में कलाकार ऋषभ चौहान का विशेष योगदान रहा।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस का हुआ आयोजन

दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्धारित उद्बोधन सप्ताह का तृतीय दिवस 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' के रूप में अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा रोहिणी के तेरापंथ भवन में शासनश्री मुनि बिमल कुमार जी के सान्निध्य में उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। मुनिश्री ने अणुव्रत के महत्व को समझाते हुए कहा कि अणुव्रत के नियमों को जीवन में अपनाने से हमारा जीवन संयमित हो सकता है।

अणुव्रत एक ऐसा आयाम है, जो वर्ण, जाति और संप्रदाय से ऊपर उठकर कार्य करता है। अणुव्रत समाज के सामने एक आचार संहिता प्रस्तुत करता है, जिसे अपनाकर व्यक्ति समाज की कई बुराइयों का नाश कर सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ नियम अवश्य अपनाने चाहिए।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के प्रकाशन प्रभारी सुरेंद्र नाहटा, दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा और मनीष महनोत ने 'संयममय जीवन हो' अणुव्रत गीत का संगान किया।

संस्कारी व्यक्तित्वों का आविष्कार करने वाली बेस्ट फैक्ट्री है ज्ञानशाला

मोमासर।

अच्छाई और बुराई का संघर्ष सदियों पुराना है किंतु इस संघर्ष में विजय सदैव अच्छाई की ही होती है क्योंकि अच्छाइयों का आधार व्यक्ति के सद्द्संस्कार होते हैं। बाल्यावस्था संस्कार निर्माण की वह सर्वोत्तम अवस्था होती है जहां जीवन की समग्र सफलताओं का ढांचा तैयार किया जा सकता है। ज्ञानशाला उस ढांचे को तैयार करने वाली बेस्ट फैक्ट्री है जिसमें संस्कारी व्यक्तियों का आविष्कार किया जाता है। उक्त विचार तेरापंथ भवन मोमासर में विराजित साध्वी संघप्रभा जी ने 'बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय' विषयक संस्कार निर्माण कार्यशाला में प्रकट किए। कार्यशाला में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'तोता तोता तुम क्यों रोता' तथा 'लेवा मारे प्रभु जी रो नाम, ए दुनिया लाजा मरे' दो रोचक काव्य नाटकों की सुंदर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की तैयारी एवं संचालन में प्रमुख भूमिका निभाते हुए साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा इन्हीं बच्चों में राम, कृष्ण, महावीर की तस्वीर छिपी हुई है, जरूरत है सिर्फ स्नेहिल अनुशासन में सम्यक प्रशिक्षण द्वारा उजागर करने की।

तेरापंथ सभा की ओर से कमल सेठिया ने बच्चों की प्रस्तुति की प्रशंसा करते हुए कहा साध्वीश्री ने ज्ञानशाला के इन बच्चों पर जो मेहनत की है वह वास्तव में मोमासर के लिए बड़े सौभाग्य की बात है। प्रस्तुति के क्रम में भरत सोनी ने 'राम-राम का रूपक' तथा कांता सोनी ने 'संता थारी नगरी में' भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी विधिप्रभा जी के परमेष्ठी संगान से हुआ।

संयम को राजपथ की दी गई उपमा

इंदौर।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में मुमुक्षु भीखमचंद नखत के सम्मान समारोह का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ हुआ। साध्वीश्री ने इस अवसर पर कहा कि आज इंदौर में ऐसे व्यक्तित्व का आगमन हुआ है, जिनकी आगामी संयम की यात्रा संभावित है। आपने संकल्प लिया की मैं संयम के पथ पर अग्रसर होने के पूर्व चातुर्मासिक क्षेत्रों में विराजित सभी चारित्रात्माओं के दर्शनों का लाभ लूं। इसी कड़ी में आप आज इंदौर तेरापंथ भवन में उपस्थित हुए हैं।

संसार में तीन चीजें दुर्लभ होती हैं - मनुष्य जन्म, मुमुक्षा भाव और महापुरुषों का आश्रय। मुमुक्षु नखत को तीनों का ही योग मिला हुआ है। आप ऐसे विरले व्यक्ति हैं जो कि सतत् गुरु के आभावलय में रहकर सेवा दर्शनों का लाभ लेते हैं। साध्वी श्री ने आगे कहा कि संयम से व्यक्ति अपने पुराने से पुराने कर्मों का अवरोध कर लेता है। भगवान महावीर की वाणी में संयम को राजपथ की उपमा दी गई है। आज मुमुक्षु का अभिनंदन नहीं हो रहा है अपितु आपकी सेवा, समर्पण एवं संयम का अभिनंदन हो रहा है। आपके प्रति यही मंगल भावना है कि आप शीघ्रातिशीघ्र संयम के महामार्ग पर अग्रसर हो।

इस अवसर पर सहवर्ती साध्वी वृंद ने अभिनंदन गीतिका का संगान किया गया। मुमुक्षु भाई का परिचय तेजकरण नखत द्वारा दिया गया। मुमुक्षु नखत ने गुरुदेव श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य के अपने अनुभव सबके समक्ष साझा किए। इस अवसर पर अभिनंदन के क्रम में तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री मोना बंबोरी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अर्पित जैन, टी.पी.एफ.के अध्यक्ष चंद्रेश भटेरा ने अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा आपका सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने आपके विशिष्ट व्यक्तित्व को रेखांकित किया। आभार तेरापंथी सभा के सहमंत्री मनीष दूगड़ ने दिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

संक्षिप्त खबर

एक कदम स्वालंबन की ओर कार्यशाला का आयोजन

सुजानगढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में 'श्री उत्सव - एक कदम स्वालंबन की ओर' का आगाज किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। विधायक मनोज मेघवाल, सभापति निलोफर गौरी, प्रतिपक्ष नेता जयश्री दाधीच और नगर अध्यक्ष रामावतार मंगलहारा द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भुतोडिया द्वारा स्वागत किया गया, तत्पश्चात आए हुए सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। विभिन्न प्रकार की लगभग 45 स्टॉल लगाई गई। उत्सव में 500 से भी ज्यादा लोगों की उपस्थिति रही। रेंवतमल भूतोडिया और मांगीलाल चौरड़िया का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ।

शक्ति संवर्धन का महान् स्रोत : जप अनुष्ठान

मण्डिया। साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा- मंत्र शक्ति को बढ़ाने वाला एवं पर शक्ति से रक्षा करने वाला सशक्त कवच है। मंत्र शक्ति मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। तेरापंथ धर्मसंघ में नवरात्रि में विशिष्ट मंत्रों एवं आगम सूक्तों का जप किया जाता है। ॐ के सम्यक लयबद्ध उच्चारण से मस्तिष्क रोगों का शमन होता है। साध्वीश्री जी ने जप अनुष्ठान कराते हुए शक्ति संवर्धन करने हेतु आह्वान किया। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने बड़ी ही लयबद्धता एवं तल्लीनता के साथ जप-अनुष्ठान में भाग लिया। अनुष्ठान में समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष शुभारंभ

हैदराबाद। प्रेक्षावाहिनी सिकंदराबाद और प्रेक्षावाहिनी हिमायतनगर, हैदराबाद के अंतर्गत डी.वी. कॉलोनी तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष शुभारंभ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रेक्षाध्यान गीत का सामूहिक संगान किया गया। साध्वी शिवमालाजी ने प्रेक्षाध्यान पर, साध्वी अमितरेखा जी ने ध्यान की महत्ता पर एवं साध्वी अर्हमप्रभा जी ने ध्यान के आलंबन पर अपने उद्गार व्यक्त किए। प्रेक्षाध्यान शिविर, ऑनलाइन कार्यशाला की जानकारी और प्रेक्षा मेडिटेशन ऐप के बारे में साउथ ज़ोन कोऑर्डिनेटर, प्रेक्षा प्रशिक्षिका डिंपल बैद ने विस्तार से बताया। महासभा प्रभारी लक्ष्मीपत बैद ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का सफल संयोजन प्रेक्षावाहिनी हिमायतनगर की संवाहक प्रेम संचेती ने और आभार ज्ञापन प्रेक्षा प्रशिक्षिका पूजा पटावरी ने किया।

आचार्य तुलसी सेतु नामकरण

इंदौर। इंदौर रिंग रोड पर बना 6 लेन 'तीन इमली ओवर ब्रिज' का नाम बदल कर नामकरण आचार्य तुलसी सेतु कर दिया गया है। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी पारमार्थिक एवं धार्मिक चैरिटी ट्रस्ट के प्रयासों से यह संभव हो सका एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा इंदौर का भी पूर्ण सहयोग रहा। इसमें रमेश कोठारी, सुरेश सुराणा, अमित छाजेड़, जितेंद्र भदानी का सराहनीय सहयोग रहा।

आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष का मनोनयन

लाडनूं।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लाडनूं के तत्त्वावधान में लाडनूं के निवासी व प्रवासी लोग अच्छी संख्या में आचार्य श्री महाश्रमण के श्री चरणों में उपस्थित हुए।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रकाशचंद बैद ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि सन् 2026-27 में परम पूज्य गुरुदेव के मंगल सान्निध्य में लाडनूं में आयोजित होने वाले योगक्षेम वर्ष की प्रवास व्यवस्थाओं के संदर्भ में गठित होने वाली आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष के रूप में मनोनयन हेतु प्रस्तावित नामों में से विधि अनुसार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा प्रमोद बैद सुपुत्र स्व. रणजीतसिंह बैद (लाडनूं-कोलकाता) का नाम अध्यक्ष पद हेतु अनुशंसित किया गया है, तदनुसार उन्हें आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति, लाडनूं का अध्यक्ष मनोनीत किया जा रहा है। उन्होंने पूज्यप्रवर के सम्मुख श्री बैद को मनोनयन पत्र भी सौंपा। आचार्यप्रवर ने नवमनोनीत अध्यक्ष को मंगलपाठ सुनाया।

तदुपरांत नव मनोनीत अध्यक्ष बैद ने हृदयोद्गार व्यक्त किए। परम पूज्य गुरुदेव ने उपस्थित लाडनूं वासियों को मंगल पाथेय प्रदान किया। इस उपक्रम का संचालन लाडनूं तेरापंथी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेन्द्र खटेड़ ने किया।

ज्ञानशाला द्वारा नवज्ञा कार्यशाला का आयोजन

मुंबई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुंबई के तत्वावधान में मुम्बई ज्ञानशाला विभाग द्वारा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, कालबादेवी में 'नवज्ञा - नव विचार - नव दिशा' कार्यशाला आयोजित की गई। मुनि कुलदीप कुमार जी और मुनि मुकुल कुमार जी की उपस्थिति में इस कार्यशाला की रूपरेखा राजश्री कच्छारा, अंजु चौधरी, और चंचल परमार ने तैयार की।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र से की, जिसके बाद परामर्शक मधु मेहता ने ध्यान के प्रयोग करवाए। पहले चरण में आशुभाषण प्रतियोगिता हुई, जिसमें 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विजेताओं में रेखा धाकड़ (प्रथम), कविता बदामिया (द्वितीय), और कुसुम हिरण एवं मीना मेडतवाल (तृतीय) शामिल थे। सभी विजेताओं को सम्मानित किया गया। आशुभाषण प्रतियोगिता का संचालन निर्मला मेहता ने किया और निर्णायक की भूमिका मुंबई ज्ञानशाला की पूर्व आंचलिक संयोजिका निर्मला चण्डालिया एवं सुमन चपलोत ने निभाई।

दूसरे चरण में महाप्रज्ञ जॉन की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मुनि कुलदीप कुमार जी ने ज्ञानशाला के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए नए ज्ञानार्थियों को जोड़ने की प्रेरणा दी। मुनि मुकुल कुमार जी ने नवज्ञा का अर्थ बताते हुए मिच्छामि दुक्कड़ं, खमत खामणा के अनेक रहस्यों को उद्घाटित किया। प्रत्याख्यान, प्रायश्चित, सारणा-वारणा, सूझता-असूझता आदि को समझाते हुए भक्तामर के श्लोक व लाभ की सभी को सूक्ष्म जानकारी प्रदान की। मुम्बई ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मुनिश्री द्वारा प्रदत्त नवरात्रि मंत्रों के जाप का संकल्प लिया। परामर्शक हेमलता मादरेचा एवं नीलम कोठारी द्वारा तैयार संकल्प पत्र मुनिश्री को भेंट किया गया। आंचलिक संयोजिका राजश्री कच्छारा ने स्वागत स्वरों के साथ अपने भावों को अभिव्यक्त किया।

कार्यक्रम में मुंबई सभा के कई प्रमुख सदस्य और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई के ज्ञानशाला परिवार की प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया, और विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला का कुशल संचालन संगीता बाफना और नयना धाकड़ ने किया, जबकि आभार ज्ञापन वनिता धाकड़ ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कई अन्य सदस्यों ने भी सहयोग किया।

संगठन यात्रा में जाने महासभा के प्रकल्प

हिरियुर।

'संस्थाशिरोमणि' जैनश्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने त्रिदिवसीय कर्नाटक यात्रा के अंतर्गत हिरियुर पहुंचकर साध्वी पावनप्रभाजी के दर्शन किए। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोचार के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। महिला मंडल द्वारा सभा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। मनसुखलालजी सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। सभाध्यक्ष जयन्तिलाल चौपड़ा ने स्वागत अभिनन्दन किया। श्रावको को सम्बोधित करते हुए साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा - तेरापंथ एक प्राणवान् एवं शक्तिशाली धर्मसंघ है, जहाँ मर्यादा, अनुशासन एवं संगठन इसके प्राणतत्त्व है। तेरापंथ की अनेक संस्थाओं में संस्था शिरोमणि तेरापंथ की मातृ संस्था महासभा है। तेरापंथ के श्रावक-श्राविका सशक्त अंग हैं, आधार स्तंभ हैं।

महासभा द्वारा समय-समय पर सार संभाल होती रहती है। महासभा अध्यक्ष सहित पूरी टीम ने साध्वीश्री से आशीर्वाद तथा प्रेरणा प्राप्त करने के उपरान्त हिरियूर सभा के कार्यकर्ताओं को महासभा के प्रकल्पों की जानकारी देते हुए उन प्रकल्पों को शत प्रतिशत अपने क्षेत्र में अनुपालित कराए जाने सहित संघीय कार्यों से स्वयं को जोड़े रखने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात कार्यकर्ताओं से वार्तालाप के दौरान उनकी बातों को सुनकर उनकी जिज्ञासाओं को समाहित किया गया।

अध्यक्ष सेठिया द्वारा तेरापंथ भवन हिरियूर में नवीनीकृत पुस्तकालय का उद्घाटन भी किया गया। मंत्री देवराज चौपड़ा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपाध्यक्ष तेजराज चौपड़ा ने किया। संगठन यात्रा में महासभा के दक्षिण कर्नाटक आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा, उत्तर कर्नाटक के आंचलिक प्रभारी कमल छाजेड़, महासभा कार्यकारिणी के सदस्य संजय बांठिया भी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबर

आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यशाला का आयोजन

शिवकाशी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार शिवकाशी में स्वास्थ्य के चार प्रमुख बिंदुओं—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक—पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रेक्षाध्यान, योगा, और एक्यूप्रेशर की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और प्रेरणा गीत से हुई। मंगलाचरण दिव्या आंचलिया व अवंतिका आंचलिया ने किया। सुप्रिया सेठिया ने प्रेक्षाध्यान, नेहा बरडिया ने योग और संजु आंचलिया ने एक्यूप्रेशर के बारे में जानकारी दी। सज्जन डागा और कुसुम बैद ने सामाजिक स्वास्थ्य पर अपने विचार साझा किए, जबकि संपत डागा ने आध्यात्मिकता पर जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन बेला कोठारी ने किया।

Plug in with Monk का आयोजन

साउथ हावड़ा। मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार 'A Spiritual Talk Show - Plug in with Monk' का आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ किशोर मंडल साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। इस टॉक शो में किशोर मंडल के सदस्यों व श्रोताओं द्वारा मुनि जिनेशकुमार जी से धार्मिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जिज्ञासाएं की गई, जिनका समाधान मुनिश्री ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- बाल और युवा के बीच की कड़ी है किशोर। आज का किशोर ही कल का युवा है, देश का कर्णधार है। किशोरों को संस्कारी बनाना बहुत जरूरी है। किशोर संस्कारी है तो घर परिवार में शांति रहेगी, किशोर अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहें। वर्ष में एक बार गुरु दर्शन का लक्ष्य रखें, प्रतिदिन साधु-संतों के दर्शन करें, जीवन स्वस्थ रहे, किसी भी प्रकार की विकृति नहीं आए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणालकुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। आभार ज्ञापन अरिहंत डाकलिया ने तथा संचालन आशीष बैद ने किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ। तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ और उत्तरपाड़ा सभा द्वारा उत्तरपाड़ा ज्ञानशाला में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 16 बच्चों ने भाग लिया। प्रशिक्षक अरुण नाहटा ने ध्यान का महत्व समझाते हुए दीर्घ स्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग और शनिवारीय सामायिक को नियमित करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में उत्तरपाड़ा सभा के अध्यक्ष निकेश सेठिया का विशेष सहयोग रहा। अंत में परिषद के मंत्री जयंत घोड़ावत ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष अमित बांठिया, निकेश सेठिया, और अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

निःशुल्क मधुमेह एवं ब्लड प्रेशर जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर - श्रीरामपुरम द्वारा शंकरमठ सर्किल स्थित स्वामी विवेकानंद उद्यान में निःशुल्क मधुमेह एवं ब्लड प्रेशर जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 67 सदस्यों ने परीक्षण करवाया और लगभग 47 लोगों में मधुमेह के लक्षण पाए गए। ब्लड प्रेशर एवं मधुमेह पीड़ितों को खान-पान में संतुलन आदि की सलाह दी गई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, हरीश पोरवाड़, मुकेश भंडारी, विक्रम बोहरा एवं ललित मुणोत ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

लोक जीवन की दुर्बलताओं को परिष्कृत करता है अणुव्रत

अहमदाबाद।

अणुव्रत समिति अहमदाबाद द्वारा 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में कांकरिया मणिनगर में अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत से किया गया। साध्वी आत्माप्रभा जी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि जब हमारा देश आजाद हुआ उस समय परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की थी। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे संकल्प। अणुव्रत एक आचार संहिता का नाम है जो लोक जीवन में व्याप्त दुर्बलताओं को परिष्कृत कर संयमित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम कोई भी व्यक्ति, किसी भी उम्र में, किसी भी संप्रदाय का हो, वह स्वीकार कर सकता है। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश धींग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार करने की प्रेरणा दी। प्रचार प्रसार मंत्री संगीता सिंघवी ने विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा अणुव्रत के इन नियमों को जो भी व्यक्ति समझ कर स्वीकार करता है उसका जीवन अच्छा बनता है। सभा अध्यक्ष नवरत्न चिप्पड़, उपाध्यक्ष दिनेश चंडालिया, महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपाध्यक्ष बाबूलाल चोपड़ा ने एवं आभार ज्ञापन प्रचार प्रसार मंत्री संगीता सिंघवी ने किया।

'श्राविका गौरव' का अभिनंदन समारोह

लाडनूं।

कमला कठोतिया (सुपुत्री स्व. सोहनलाल - कंचन देवी कठोतिया) को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'श्राविका गौरव' अलंकरण प्रदान किए जाने पर उनके अभिनंदन का कार्यक्रम ऋषभद्वार, पहली पट्टी, लाडनूं में 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलताजी एवं सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। श्राविका गौरव सम्मान प्राप्तकर्ता कमला कठोतिया ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलताजी एवं सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी जी, डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञाजी, अभातेमम पूर्व अध्यक्षा पुष्पा बैद, मुमुक्षु शान्ता जैन, तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश कोचर, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुमन गोलछा, तेयुप अध्यक्ष सुमित मोदी आदि अनेकों वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। तेममं कार्यसमिति सदस्य समता बोकड़िया एवं मीनू बोथरा ने 'कमला-माणक बुआ' की जोड़ी पर संवाद प्रस्तुत किया।

लाडनूं से अभी तक तीन बहनों - शायर बैंगानी, माणक कोठारी एवं वर्तमान में कमला कठोतिया को श्राविका गौरव अलंकरण मिला है। सभी संस्थाओं द्वारा श्राविका गौरव कठोतिया को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। संयोजन तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड़ ने किया।

महाप्रभावशाली भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान

मुंबई (दादर)।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में महाप्रभावशाली मंगलकारी भक्तामर अनुष्ठान का उपक्रम रखा गया।

साध्वी विद्यावती जी ने कहा- जैन धर्म में कई प्रभावक आचार्य हुए हैं। उन्होंने जैन साहित्य भंडार को समृद्ध बनाया है। ध्यान, योग, दर्शन आदि विषयों से संबंधित कई ग्रंथों का लेखन उन्होंने किया है। उन्हीं आचार्यों में एक आचार्य मानतुंग हुए हैं जिन्होंने भक्तामर स्तोत्र की रचना करके जैन समाज को एक नया आलोक दिया है। संपूर्ण जैन समाज के हृदय में भक्तामर के प्रति निष्ठा है, सम्मान है।

साध्वी ऋद्धियशाजी ने कहा- यह स्तोत्र महामंगलकारी एवं प्रभावशाली है। आचार्य मानतुंग ने जब भक्तामर की रचना की उसका एक अलग ही इतिहास है। साध्वी श्री ने संक्षेप में आचार्य मानतुंग के जीवन वृतांत को सुनाया। साध्वी प्रियंवदाजी ने कहा- प्रतिदिन भक्तामर का पारायण करने वाला अपने भीतर एक विशेष ऊर्जा संग्रहित करता है। साध्वी प्रियंवदाजी ने चौबीसी की प्रथम ढाल का भी संगान किया।

साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी ने भी भक्तामर के श्लोकों एवं मंत्रों का उच्चारण करवाया। अच्छी संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भी एक लय एक स्वर के साथ भक्तामर का पाठ किया।

विवेक से किया गया तप होता है फलदाई

नोखा।

मन का विद्यालय विवेक है। विवेक से किया गया तप फलदाई होता है। निर्णय करें और शक्ति के साथ तपस्या में जुट जाएं। जीवन में संतोष, शक्ति, पवित्रता तपस्या से संभव है, इससे आनंद की अनुभूति होती है।

सुशील भूरा ने पहले उपवास से अधिक तप नहीं किया। तप के साथ स्वाध्याय करने से ज्ञान आराधना परिपक्व होती है। उपरोक्त उद्गार मासखमण तपस्वी सुशील भूरा के अभिनंदन समारोह में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने कहे। साध्वी समताश्रीजी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन किया। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद् ने समवेत स्वरों में गीतिका का संगान किया। भूरा परिजन ने तपस्या पर बधाई व अनुमोदना स्वर व्यक्त किए। तपस्वी सुशील भूरा ने देव, गुरु, धर्म का प्रताप व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की पुस्तक 'शक्ति का स्रोत' को अपनी प्रेरणा बताया। नव दीक्षित साध्वी मनोज्ञप्रभाजी ने व्रत ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

साध्वी वृन्द द्वारा 'भिक्षु बगिया में खुशियां छाई' गीतिका से समां बांध दिया। सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, उपाध्यक्ष लाभचंद छाजेड़ ने अभिनंदन पत्र वाचन किया। आनंद भूरा, इंदरचंद बैद 'कवि', कोमल भूरा ने विचार व्यक्त किए। कुशल संचालन सभा मंत्री मनोज घीया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

संबोधि

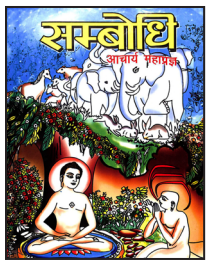

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मनुष्य का मन मोह-प्रधान है। उसे भोग, वासना और विषयों से जितना अनुराग होता है उतना धर्म से नहीं। धर्म के बिना आत्मा को शांति नहीं मिलती। श्रावक संसार के कार्यों में उलझा हुआ भी धर्म को विस्मृत नहीं करता।

वह अपने और पराये व्यक्तियों के लिए हिंसा करता हुआ भी उसमें लिप्त नहीं होता। वह मानता है कि मेरी दुर्बलता है। वह उदासीन होकर काम करता है। उसका केन्द्र बिन्दु आत्मा है। वह आत्म-शांति के लिए जो अवलंबन लेता है वे ही विश्राम-स्थल हैं।

जैसे भारवाहक के चार विश्राम स्थल हैः

१. गठरी को बाएं से दाएं कंधे पर रखना।
२. देह-चिंता से निवृत्त होने के लिए उसे नीचे रखना।
३. सार्वजनिक स्थान में विश्राम करना।
४. स्थान पर पहुंचकर उसे उतार देना।

वैसे ही श्रावक के चार विश्राम हैंः

१. शीलव्रत, गुणव्रत तथा उपवास ग्रहण करना।
२. सामायिक और देशावकाशिक व्रत लेना।
३. अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को प्रतिक्रमण पूर्वक पौषध।
४. मारणांतिक संलेखना करना।

१०. परिग्रहं प्रहास्यामि, भविष्यामि कदा मुनिः।
त्यक्ष्यामि च कदा भक्तं, ध्यात्वेदं शोधयेन्निजम्।।

'मैं कब परिग्रह छोडूंगा, मैं कब मुनि बनूंगा, मैं कब भोजन का परित्याग करूंगा' श्रावक इस प्रकार के चिंतन अथवा मनोरथ से आत्मशोधन करे।

श्रावक श्रावकत्व में ही संतुष्ट रहना नहीं चाहता। मुमुक्षु व्यक्ति का साध्य होता है-पूर्ण आत्म-स्वातन्त्र्य। आत्मा की स्वतंत्रता के लिए अर्थ और काम बंधन हैं। श्रावक परिग्रह के परिमाण से अपरिग्रह की ओर बढ़ना चाहता है। मुनि-जीवन के लिए पूर्ण अकिंचनता अपेक्षित है। अतः उसका पहला संकल्प है परिग्रह त्याग का। धन, स्वर्ण, चांदी, मुक्ता, दास दासी आदि सभी परिग्रह हैं। शरीर के प्रति जो आसक्ति है वह उसे छोडने का संकल्प करता है। परिग्रह बंधन है। एक कवि के शब्दों में देखिए अर्थ की उत्पत्ति में दुःख उठाना होता है। उत्पन्न अर्थ की सुरक्षा करनी होती है। उसमें भी दुःख है। आय में दुःख है और व्यय में भी दुःख है। अतः अर्थ दुःख का स्थान है। श्रावक परिग्रह से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन यह संकल्प करता है कि कब मैं अल्पमूल्य या बहुमूल्य परिग्रह का प्रत्याख्यान करूंगा।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री नगां जी (बगड़ी) दीक्षा क्रमांक 26

साध्वीश्री ने अपने अंतिम समय में अनेक तपस्याएं की। जिसका उल्लेख इस प्रकार है- उपवास /3, 2/9, 3/19, 4/8, 6/1, 8/1 इसके बाद आपने अनशन कर लिया जो 10 दिन का आया। आपने कार्तिक शुक्ला 14 से लेखना तप प्रारम्भ किया और वैशाख शुक्ला 13 को अनशन सम्पन्न हुआ। छह महिनों में आपने 43 दिन आहार किया 124 दिन संलेखना तप के तथा 10 दिन संथारे के हुए।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

बंधन की मुक्ति : मुक्ति का अनुबंध

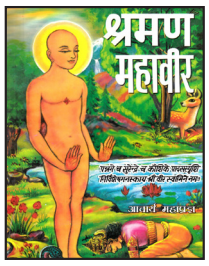

इस स्वभाव की अनुभूति ही आत्मा है। वह देह में स्थित होने पर भी उससे भिन्न है।

भगवान् महावीर स्वतंत्रता के साधक थे। वे सारी परम्पराओं से मुक्त होने की दिशा में प्रयाण कर चुके थे। फिर उन्हें अपने से भिन्न किसी परम सत्ता की परतंत्रता कैसे मान्य होती? उन्होंने परम सत्ता को अपने देह में ही खोज निकाला।

उनका ध्येय था- आत्मा। उनका ध्यान था- आत्मा। उनका ध्याता था- आत्मा । उनका ध्यान था आत्मा के लिए। उनके सामने आदि से अंत तक आत्मा ही आत्मा था। तिल में तेल, दूध में पूत और अरणिकाष्ठ में जैसे अग्नि होती है, वैसे ही देह में आत्मा व्याप्त है।

कोलू के द्वारा तिल और तेल को पृथक् किया जा सकता है। मथनी के द्वारा दूध और घृत को पृथक् किया जा सकता है। घर्षण के द्वारा अरणिकाष्ठ और अग्नि को पृथक् किया जा सकता है। वैसे ही भेद-विज्ञान के द्वारा देह और आत्मा को पृथक् किया जा सकता है।

भगवान् महावीर ध्यानकाल में देह का व्युत्सर्ग और त्याग कर आत्मा को देखने का प्रयत्न करते थे। स्थूल शरीर के भीतर सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म शरीर के भीतर आत्मा है। भगवान् चेतना को स्थूल शरीर से हटाकर उसे सूक्ष्म शरीर में स्थापित करते। फिर वहां से हटाकर उसे आत्मा में विलीन कर देते।

आत्मा अमूर्त है, सूक्ष्मतम है, अदृश्य है। भगवान् उसे प्रज्ञा से ग्रहण करते। आत्मा चेतन है शरीर चेत्य है। आत्मा द्रष्टा है, शरीर दृश्य है। आत्मा ज्ञात है, शरीर ज्ञेय है। भगवान् इस चेतन, द्रष्टा और ज्ञाता स्वरूप की अनुभूति करते-करते आत्मा तक पहुंच जाते। वे आत्मध्यान में चिंतन का निरोध नहीं करते। वे पहले देह और आत्मा के भेद-ज्ञान की भावना को सुदृढ़ कर लेते। उसके सुदृढ़ होने पर वे आत्मा के चिन्मय स्वरूप में तन्मय हो जाते। अशुद्ध भाव से अशुद्ध भाव की और शुद्ध भाव से शुद्ध भाव की सृष्टि होती है। इस सिद्धान्त के आधार पर भगवान् आत्मा के शुद्ध स्वरूप का ध्यान करते थे। उनका वह ध्यान धारावाही आत्म-चिंतन या आत्म-दर्शन के रूप में चलता था।

भगवान् सर्दी से धूप में नहीं जाते; गर्मी से छाया में नहीं जाते; आखें नहीं मलते; शरीर को नहीं खुजलाते; वमन-विरेचन आदि का प्रयोग नहीं करते; चिकित्सा नहीं करते; मर्दन, तैल-मर्दन और स्नान नहीं करते। एक शब्द में वे शरीर की सार-सम्हाल नहीं करते। ऐसा क्यों? कुछ विद्वानों ने इस चर्या की व्याख्या यह की है, 'भगवान् ने शरीर को कष्ट देने के लिए यह सब किया।' मेरी व्याख्या इससे भिन्न है। शरीर बेचारा जड़ है। पहली बात उसे कष्ट होगा ही कैसे? दूसरी बात-उसे कष्ट देने का अर्थ ही क्या? तीसरी बात भगवान् का शरीर धर्म-यात्रा में बाधक नहीं था, फिर वे उसे कष्ट किसलिए देते? मेरी व्याख्या यह है भगवान् आत्मा में इतने लीन हो गए कि बाहरी अपेक्षाओं की पूर्ति का प्रश्न बहुत गौण हो गया और चेतना के जिस स्तर पर शारीरिक कष्टों की अनुभूति होती है, वह चेतना अपने स्थान से च्युत होकर चेतना के मुख्य स्रोत की ओर प्रवाहित हो गई। इसलिए वे साधनाकाल में शरीर के प्रति जागरूक नहीं रहे।

तन्मूर्तियोग

भगवान् ध्यान के समय साधन और साध्य में समस्वरता स्थापित करते थे। उनकी भाषा में इसका नाम 'तन्मूर्ति' या 'भावक्रिया' है। यह अतीत की स्मृति और भविष्य की कल्पना से बचकर केवल वर्तमान में रहने की क्रिया के साथ पूर्णरूपेण सामंजस होने की प्रक्रिया है। वे इस ध्यान का प्रयोग चलने, खाने-पीने के समय भी करते थे। वे चलते समय केवल चलते ही थे-न कुछ चिंतन करते न इधर-उधर झांकते और न कुछ बोलते। उनके शरीर और मन दोनों परिपूर्ण एकता बनाए रखते।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्

आचार्य सोमप्रभसूरि ने सिन्दूरप्रकर में कहा है-

तस्याग्निर्जलमर्णवः स्थलमरिर्मित्रं सुराः किङ्कराः
कान्तारं नगरं गिरिगृहमहिर्माल्यं मृगारिर्मृगः।
पातालं विलमस्त्रमुत्पलदलं व्यालः शृगालो विषं
पीयूषं विषमं समं च वचनं सत्याञ्चितं वक्ति यः।।

सत्यांचित भाषा बोलने वाले व्यक्ति के लिए अग्नि जल बन जाती है। समुद्र स्थल बन जाता है। शत्रु मित्र बन जाते हैं। देवता उसके सेवक बन जाते हैं। जंगल उसके लिए नगर बन जाता है। पहाड़ उसके लिए घर बन जाता है। सर्प माला बन जाता है। सिंह मृग बन जाता है। अस्त्र पत्र (पत्ता) बन जाता है। उसके लिए विषम स्थिति सम बन जाती है। यह सारी शक्ति सत्य संकल्पित मानस की होती है।

सत्यभाषा निरवद्य है या सावध? यह भी विवेचनीय है।

सूत्रकृतांग में कहा गया है "**सच्चेसु या अणवज्जं वयंत्ति**" सत्य भाषाओं में निरवद्य सत्य भाषा को श्रेष्ठ माना गया है। जिस सत्य भाषा से किसी की हिंसा होती हो, किसी को पीड़ा पहुंचती हो, वह सत्य भी वांछनीय नहीं है। एक साधु जंगल में बैठा था। उसने देखा कि एक बकरा दौड़ता-दौड़ता आया और वह पूर्व दिशा की ओर चला गया। पीछे से एक हट्टा-कट्टा आदमी आया और उसने साधु से पूछा कि महाराज! आपने बकरे को देखा होगा? वह किधर गया है? पृच्छक व्यक्ति की भावभंगिमा से मुनि को यह ही अनुमान हो गया कि यह बकरे का वध करने का इच्छुक है। अब यदि मुनि उसे बता देता है कि बकरा पूर्व दिशा की ओर गया है तो भाषा सत्य है किन्तु वह सावद्य सत्य भाषा है। यह भाषा मुनि के लिए सदोष और अतिचारकारक होती है। इसलिए मुनि विधानतः वहां यह नहीं कह सकता कि बकरा पूर्व दिशा की ओर गया है। वहां मुनि के लिए इस विषय में मौन काम्य होता है अथवा पृच्छक को अहिंसा का उपदेश देना काम्य होता है।

सत्य के लिए ऋजुता का विकास आवश्यक है। उसके बिना सत्य का टिकना कठिन होता है। कभी-कभी व्यक्ति वंचनापूर्ण भाषा भी बोलना चाहता है और सत्य को भी कायम रखना चाहता है। यह प्रयास शाब्दिक दृष्टि से भले उसे असत्य से बचा ले किन्तु वह करीब-करीब भाव असत्य ही हो जाता है।

लड़की का पिता एक लड़के के पिता के पास गया और उसके लड़के के साथ अपनी लड़की के विवाह का प्रस्ताव रखा। दूसरे सेठ ने सम्मुखीन सेठ की लड़की के बारे में जानकारी चाही तो लड़की के पिता ने कहा मेरी पुत्री पढ़ी-लिखी तो है ही और दिन भर एक पैर पर काम करती रहती है। वह इस लहजे में बोला कि उसकी लड़को की अति परिश्रमशीलता व्यक्त हो रही थी। पूर्व सेठ ने जब लड़के के बारे में जानकारी चाही तो लड़के के पिता ने कहा - मेरा लड़का अच्छा पढ़ा-लिखा तो है ही, बड़ा सुशील है, शांत है और सबको एक दृष्टि से देखता है। पिता ने ऐसे लहजे में बात रखी कि लड़के की सुशीलता और सबके प्रति समदृष्टि का भाव अभिव्यक्त हो रहा था। दोनों पिता अपनी भावी पुत्रवधू और दामाद की योग्यता एवं स्थिति से प्रफुल्लित हो रहे थे। जल्दबाजी में सम्बन्ध निश्चित कर दिया गया और निकटतम मुहूर्त्त देखकर शादी भी कर दी गई। यह रहस्य तो बाद में उद्घाटित हुआ कि जिस लड़की के लिए कहा गया था- 'वह दिन भर एक पैर पर काम करती है', वह लंगड़ी है और जिस लइके के लिए कहा गया था, 'सबको एक दृष्टि से देखता है', वह एकाक्षी (काणा) है।

दोनों पिताओं की भाषा शब्दों में असत्य थी, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता किन्तु बात का लहजा और तरीका इस तरह का था जो एक दूसरे को भ्रान्त करने वाला था। इस तरह की भाषा असत्य न होते हुए भी असत्य की कोटि में आ जाती है। आगमों में कहा गया है कि यह छलनापूर्ण और असत्यपूर्ण व्यवहार अगले जन्म में तिर्यंच गति (पशु आदि की गति) दिलाने वाला बन सकता है। असत्य की विभिन्न कोटियां होती हैं। विस्मृति/भूल से बोलने में स्खलित होने से जो असत्य भाषण होता है, वह बहुत सामान्य कोटि का असत्य है। लोभ आदि कारणों से दूसरों को ठगने के लिए जो असत्य भाषण किया जाता है वह विशेष पाप कर्म-बन्ध का हैतु बन जाता है। अति वाचालता भी असत्य भाषण का निमित्त बनती है, इसलिए सत्यव्रती व्यक्ति के लिए कम बोलना और विचारपूर्वक बोलना अपेक्षित रहता है। केवल राजी करने के लिए प्रिय भाषा बोल देना जो कि तथ्याधारित न हो, वह असत्य कोटि की भाषा है। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अक्टूबर 2024
सप्ताह के विशेष दिन

13 नवम्बर
भगवान अरनाथ केवलज्ञान कल्याणक

15 नवम्बर
चातुर्मासिक पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री पोखरदासजी (बेमाली) दीक्षा क्रमांक 165

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास, बेले, तेले, चोले आदि बहुत तप किये। अन्य बड़ी तपस्या इस प्रकार है- 22/1, 31/1, 32/1, 35/4, 37/3, 41/1, 42/1, 46/1, 60/2, 61/1, 75/1।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का शपथ ग्रहण समारोह

पुणे

मुनि डॉ. आलोककुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF), पुणे की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर मयूरी सुराणा ने अध्यक्ष पद की शपथ ली और उनकी नई टीम ने भी पदभार ग्रहण किया। कार्यक्रम में JITO Apex International के अध्यक्ष विजय भंडारी, JITO पुणे के अध्यक्ष इंदरचंद छाजेड़ और डायरेक्टर अभिजीत डूंगरवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह की शुरुआत TPF गीत के गायन से हुई, जिसके बाद नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें मयूरी सुराणा को अध्यक्ष, मनोज तलेसरा, विनय छाजेड़, और प्रदीप छाजेड़ को उपाध्यक्ष, पूजा संचेती को मंत्री, प्रज्ञा बंब को कोषाध्यक्ष, ऋषभ सुराणा को सह मंत्री और राशि मरलेचा को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों के साथ नियुक्त किया गया। अन्य कन्वेनर और को-कन्वेनर की भी घोषणा की गई। TPF नेशनल टीम में भूषण कोटेचा, रोशन चोरडिया और राजेश भंसाली की नियुक्ति पर भी बधाई दी गई। विजय भंडारी ने नई टीम को शपथ दिलाई, और पूर्व अध्यक्ष रोशन चोरडिया ने अपने कार्यकाल के अनुभव साझा करते हुए नई टीम को शुभकामनाएं दीं। मयूरी सुराणा ने अपने वक्तव्य में सभी का धन्यवाद करते हुए पुणे TPF को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प लिया। मुनि डॉ. आलोककुमार जी और मुनि हिमकुमार जी ने टीम को आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, और अन्य सामाजिक संगठनों के प्रमुख सदस्य उपस्थित थे। संचालन और आभार ज्ञापन पूजा संचेती ने किया।

जोधपुर

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम जोधपुर के सत्र 2024—25 के लिए नव नियुक्त कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में श्री मेघराज तातेड गेस्ट हाउस सरदारपुरा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। नव नियुक्त अध्यक्ष महेंद्र मेहता ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। अध्यक्ष मेहता ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की। टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिलीप कावड़िया ने साध्वीश्री की उपस्थिति में नव नियुक्त कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण कराकर मंगलकामना प्रेषित की। आप ने टीपीएफ के विभिन्न आयामों की जानकारी समाज को दी तथा नवनियुक्त टीम से अनुरोध किया कि वो संस्था के उद्देश्यों को धरातल पर क्रियान्वित करे। साध्वी प्रमोदश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि TPF जोधपुर की टीम बहुत अच्छा कार्य कर रही है। इनका पिछला कार्यकाल भी बहुत अच्छा रहा। ये टीम इसी तरह मिलजुल कर कार्य करे तथा सभी को साथ लेकर समाजोपयोगी कार्यक्रम करती रहे। साथ ही साथ फोरम के सदस्यों में आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि भी होती रहे। साध्वी श्री ने आगे कहा कि जो व्यक्ति टीम के साथ कार्य करता है वह अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होता है। निवर्तमान अध्यक्ष नरेश सिंघवी ने नव नियुक्त टीम को बधाई दी। कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष मुकेश सिंघवी, अरविंद समदडिया, डॉ. प्रियंका बैद, डॉ मोहनलाल तातेड़, सचिव निखिल मेहता, कोषाध्यक्ष मुदित तातेड, सहसचिव निधि सिंघवी, अभिनव जैन, सहकोषाध्यक्ष अनंत मेहता आदि की नियुक्ति हुई। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा जाटावास अध्यक्ष मूलचंद तातेड़, सरदारपुरा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल सरदारपुरा मंत्री चेतना जैन, तेरापंथ युवक परिषद जोधपुर अध्यक्ष मितेश जैन, सरदारपुरा अध्यक्ष मिलन बांठिया, मंत्री देव सा जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष गोविंदराज पुरोहित आदि की सम्मानीय उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन एवं कार्यक्रम का कुशल संचालन फोरम सचिव निखिल मेहता ने किया।

साउथ जोन

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) हैदराबाद साउथ जोन के 2022-24 कार्यकाल के पुरस्कार समारोह और 2024-2025 के नवनियुक्त ज़ोनल टीम के शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन वर्चुअल रूप से ज़ूम पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विशाखापट्टनम की पूर्व संयुक्त सचिव प्राची सुराणा के मंगलाचरण से हुई। इसके बाद, साउथ जोन की पिछले दो वर्षों की उपलब्धियों पर एक वीडियो क्लिप प्रस्तुत की गई, जिसमें बताया गया कि साउथ जोन की शाखाओं ने 435 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए, सदस्यता में 52% की वृद्धि की, और मिशन 1313 शिक्षा सहयोग पहल में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवधि में सभी शाखाओं का संगठन दौरा भी सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष मोहित बैद (हैदराबाद) ने सभी का आभार व्यक्त किया और नवनियुक्त टीम का स्वागत करते हुए उन्हें TPF के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।ज़ोनल पुरस्कारों की घोषणा में बेंगलुरु, विशाखापट्टनम, हैदराबाद, हासन, चेन्नई, मैसूर और चिकमंगलूर जैसी शाखाओं को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, साउथ जोन की सभी शाखाओं के स्टार परफॉर्मर्स को भी सम्मानित किया गया। नव-निर्वाचित साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी (बेंगलुरु) ने अपने स्वागत भाषण में अपनी आगामी कार्यकाल की दृष्टि साझा की और TPF की उपयोगिता को दक्षिण भारत के हर श्रावक तक पहुँचाने का संकल्प लिया। उन्होंने ज़ोनल टीम की घोषणा की और सभी नवनियुक्त सदस्यों को शपथ दिलाई, जिनमें उपाध्यक्ष राजेन्द्र कोठारी, अनिल नाहर, मंत्री भरत भंसाली, कोषाध्यक्ष विवेक बोथरा, सहमंत्री प्रेक्षा नाहटा, कल्पेश बाफना, और अन्य सदस्य शामिल थे। TPF के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मंडोत ने निवर्तमान टीम की प्रशंसा की और नई टीम को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया और अन्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन ऋषभ लुनिया (हैदराबाद) ने किया, और समापन प्राची सुराणा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

फरीदाबाद

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) फरीदाबाद की नव-निर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन फरीदाबाद में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कार विधि के साथ हुई। शपथ ग्रहण समारोह में नव-निर्वाचित अध्यक्षा सपना जैन ने नव-निर्वाचित कार्यकारिणी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। संस्कारक भरत बेगवानी ने संस्कार विधि के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पहलुओं के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को जैन संस्कारों और मंत्रों की महत्ता बताई। संस्कारक जितेंद्र लूणिया ने मंगल मंत्रोच्चार द्वार पूरे वातावरण को आस्थामय बना दिया। पदग्रहण के साथ त्याग-प्रत्याख्यान की धारा ने माहौल को आध्यात्मिक कर दिया। इस अवसर पर अध्यक्षा सपना जैन, उपाध्यक्ष महेश बाफना, विक्रम राखेचा, सचिव सचिन जैन, कोषाध्यक्ष नेहा सेठिया, सह सचिव भरत सेठिया, और रोमन बैद ने शपथ ग्रहण की। कार्यक्रम में TPF गौरव संपत नाहटा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय नाहटा, नोर्थ जोन अध्यक्ष राजेश कुमार जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, TPF नोएडा अध्यक्ष सुभाष भूतोड़िया, TPF गुड़गांव मंत्री मोहित जैन, जीतो फरीदाबाद अध्यक्ष प्रवीण रांका, सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल बैद, एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी और कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

कांदिवली, मुंबई

कांदिवली स्थित तेरापंथ भवन के विशाल ऑडिटोरियम में वर्ष 2024-25 के लिए TPF मुंबई पश्चिम शाखा के पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण समारोह 'अभ्युदय' का भव्य आयोजन किया गया। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में शपथ ग्रहण के साथ-साथ मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान तथा आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के दानदाताओं का भी सम्मान किया गया। नव-निर्वाचित अध्यक्ष प्रशांत परमार ने अपनी टीम की घोषणा की और TPF के लिए अपने दृष्टिकोण को साझा किया, जिसमें TPF सदस्यों के आध्यात्मिक विकास और जैन दर्शन से परिचय की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। एक वीडियो के माध्यम से TPF के विभिन्न आयामों की जानकारी भी दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि TPF के राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी TPF के प्रमुख आयामों का विस्तार से वर्णन किया और नई टीम को शुभकामनाएं दीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में मुंबई जोन के अध्यक्ष कमल मेहता ने नयी टीम को विधिवत शपथ दिलाई। अपने संबोधन में साध्वीश्री ने सभी सदस्यों को आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और संघनिष्ठा के साथ TPF के अभ्युदय में सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया तथा श्रावक समाज को भी TPF से जुड़ने की प्रेरणा दी। साध्वी वृंद ने 'अभ्युदय- ऊंची भरे उड़ान, गण उपवन महान' गीतिका का सुमधुर संगान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन TPF मुंबई पश्चिम के नव मनोनीत मंत्री कमल धाड़ेवा ने किया, और आभार ज्ञापन नव मनोनीत कोषाध्यक्ष विकास हिरण ने किया।

हैदराबाद

'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि टीपीएफ की नई टीम संघ के प्रति सेवा भावना रखे एवं टीपीएफ के आयामों पर निष्ठापुर्वक संकल्प के साथ कार्य करे। साध्वी अमितरेखा जी ने टीपीएफ की नवीन टीम को बधाई एवं पूर्व टीम की तरह ही सफलतम बनने की प्रेरणा दी। घोषल परिवार की सेवा भावना का उल्लेख करते हुए कहा साध्वी श्री ने कहा कि विरेंद्र आज टीपीएफ के अध्यक्ष बने हैं, ये भी संघ की अच्छी सेवा करे, यही मंगल कामना करती हूं। शपथ ग्रहण समारोह की शुरुआत टीपीएफ फेमिना सदस्यों द्वारा सुमधुर मंगलाचरण से हुयी। तत्पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष पंकज संचेती ने अपने कार्यकाल के कार्यकर्मों एवम उपलब्धियों के बारे मे विस्तार से बताया और सभी को सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने नव मनोनीत अध्यक्ष विरेंद्र घोषल को शपथ दिलाई एवं सफल कार्यकाल के लिये शुभकामनाएं दी। अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने अपनी टीम के पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई, जिनमें निवर्तमान अध्यक्ष पंकज संचेती, उपाध्यक्ष सुनील पगारिया, राजेंद्र पारख, अणुव्रत सुराना, मंत्री निखिल कोटेचा, कोषाध्यक्ष अर्हम बेंगानी, सहमंत्री अनुष बंबोली, वर्षा जैन व शिखा सुराना को नियुक्त किया गया। अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने कहा कि हमें टीपीएफ को और नई ऊंचाई पर लेकर जाना है। हमें हमारा संघ हमारा दायित्व इस स्लोगन को सार्थक करते हुए कार्य करना चाहिए। अध्यक्ष ने आगामी वर्ष के लिये अपना विज़न प्रस्तुत किया एवं सभी पूर्व अध्यक्षों एवं पूरी टीम से सहयोग की अपील की। शपथ ग्रहण समारोह में विशेष तौर से पधारे टीपीएफ के राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद ने टीम को शुभकामना देते हुए टीपीएफ की महत्वपूर्ण परियोजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हम सभी संघ व संघपति के प्रति समर्पण भाव रखें, धर्मसंघ की प्रभावना में अपनी शक्ति का उपयोग करें। इस अवसर पर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के मंत्री हेमंत संचेती, महिला मंडल अध्यक्षा कविता आच्छा, तेयुप पूर्व अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, ज्ञानशाला परिवार से अंजु बैद ने नवगठित टीम को शुभकामनाएं दी। इस समारोह में टीपीफ राष्ट्रीय टीम से कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, आर्गेनाइजेशन डेवलपमेंट चेयरमैन ऋषभ दुगड, इंटेलेक्चुअल सर्विसेज प्रोजेक्ट चेयरमैन दीपक संचेती, राष्ट्रीय फेमिना कन्वेनर रक्षिता बोहरा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत सुराणा एवं निखिल कोटेचा ने आभार ज्ञापित किया।

निराहार अवस्था में होता है अपनी अंतः शक्ति का अहसास

चिकमंगलूर।

मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में जसवन्त डोसी ने 31 दिन की तपस्या कर डोसी कुल में इतिहास बनाया। उनके तप अनुमोदना के कार्यक्रम में अनुमोदन गीत की प्रस्तुति के साथ मुनि मोहजीत कुमार ने कहा- हमारे इस चातुर्मास की यह तपस्या विशेष उपलब्धि है।

जैन धर्म में तप का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज भी अनेकों तपस्वी जन तप गंगा में स्नान कर अन्तः करण से पवित्रता की ओर अग्रसर होते हैं। तप के प्रभाव की व्याख्या करते हुए मुनि जयेश कुमार जी ने कहा- ऐसी बड़ी तपस्याएं रोलरकॉस्टर की तरह होती है। इनमें अनेक उतार चढ़ाव आते हैं, रोज़ नए अनुभव होते हैं। व्यक्ति जब खाता है तब उसे सिर्फ बाहरी शक्ति का बोध होता है पर निराहार अवस्था में उसे अपनी अंतः शक्ति का अहसास होता है। इस अवसर पर उन्होंने गीत के द्वारा तपस्वी भाई के प्रति अनुमोदना के स्वर प्रकट किये।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित चिकमगलूर विधायक एच. डी. तम्मय्या ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए तपस्वी भाई जसवन्त डोसी की तपस्या के प्रति शुभकामना की। उन्होंने कहा- ऐसा तप जैन धर्म के अनुयायी ही कर सकते हैं। जैन धर्म में इस प्रकार की तपस्या करना बड़े साहस और भाग्य की बात है। मैं अपने क्षेत्र और जनता की ओर से आपकी तपस्या की बधाई देता हूं।

आज मुझे इस अवसर पर याद किया तथा मुनिवरों के दर्शन हुए, मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूं। डॉ. चन्द्रशेखर शालीमठ ने विचार व्यक्त करते हुए कहा- तप जीवन की स्वस्थता का आधार है। तप करने वाला व्यक्ति अनेक बीमारियों से मुक्त हो जाता है। हम लोगों के पास अनेक मरीज आते हैं। उन्हें भी हम कहते है कि खाने में गलत वस्तुओं का उपयोग मत करो।

आज मुझे खुशी है कि इतनी बड़ी तपस्या करने वाले भाई जसवन्त का अभिनन्दन करने का अवसर मिल रहा है। क्षेत्रीय विधान परिषद के सदस्य सी.टी. रवि की धर्म पत्नी पल्लवी रवि ने अपने भावों को प्रकट करते हुए कहा कि आज का दिन मेरे सौभाग्य का विशेष दिन है, यहां मुझे एक विशिष्ट तपस्वी का सम्मान एवं मुनि जनों के दर्शन का अवसर मिला।

मासखमण तपाराधना अनुमोदन समारोह में तपस्वी के परिजनों ने अभिवन्दना के स्वर मुखर किए। इस अवसर पर सभाध्यक्ष महेन्द्र डोसी, तेयुप अध्यक्ष जयेश गादिया, महिला मण्डल की सदस्याओं ने तपाभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि भव्यकुमार जी ने किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 का आयोजन

घाटकोपर, मुंबई।

अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा घाटकोपर सभा भवन में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 के जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुंबई और ठाणा जिले के स्कूलों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस क्रम में मुख्य रूप से चित्रकला, निबंध, भाषण, कविता व गायन प्रतियोगिताएं रखी गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई।

कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी गई। अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता ने सभी का स्वागत और अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में गुरुनानक स्कूल सायन कोलीवाडा, गोरी दत्त मित्तल हायर सेकेण्डरी स्कूल सायन कोलीवाडा, गांधी विद्या मंदिर माहिम, MDWS ज्ञानशाला, बांगुर विद्या मंदिर गोरेगांव, विवेक विद्यालय एवं जूनियर कॉलेज गोरेगांव, कुड़ीलाल गोविंदराम सेक्सरिया इंग्लिश स्कूल गोरेगांव, पटुक स्कूल सांताक्रुज, गोंधवाली MPS स्कूल अंधेरी, सेंट मैरिज स्कूल कल्याण, आर्य गुरुकुल कल्याण, डोंबिवली ज्ञानशाला ने भाग लिया।

कार्यक्रम में निर्णायक भूमिका स्वीटी मेहता, राजेश जैन, किरण परमार, आशा पिछोलिया ने निभाई। सभी छात्र-छात्राओं को मुम्बई अणुव्रत समिति की ओर से पुरस्कार भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट की मुंबई संयोजिका तरूणा कोठारी द्वारा किया गया।

अणुव्रत समिति मुंबई के मंत्री राजेश जैन द्वारा कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों तथा अध्यापकों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार व्यक्त किया गया।

एसीसी वेस्ट जॉन संयोजक किरण, महाराष्ट्र संयोजिका आशा, गोरेगांव क्षेत्रीय संयोजक डिम्पल हिरण, मुंबई संयोजिका तरुणा, सह संयोजिका मीना एवं टीम का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

अणुव्रत समिति से पदाधिकारी, क्षेत्रीय संयोजक एवं कार्यकर्ताओं आदि ने उपस्थित रहकर बच्चों का उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम में 180 बच्चों एवं अभिभावकों की उपस्थिति रही।

संस्कार शिल्प शाला का आयोजन

अमराइवाड़ी।

तेरापंथ महिला मंडल अमराईवाड़ी द्वारा शंकर विद्यालय प्राइमरी स्कूल में संस्कार शाला का आयोजन किया गया। अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी का स्वागत किया। संस्कारों के निर्माण की इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता उपासिका संगीता सिंघवी ने कहानी के माध्यम से बच्चों को क्रोध पर नियंत्रण रखने की प्रेरणा दी और इसके नुकसान बताए। महिला मंडल की सदस्यों ने मोबाइल के अधिक उपयोग के नुकसान को एक एक्ट के माध्यम से समझाया। उन्होंने नॉन-वेज न खाने और शराब से दूर रहने की प्रेरणा भी दी। इस दौरान कुछ व्यायाम भी कराए गए। इस अवसर पर प्रिंसिपल, टीचर्स और बच्चों का आभार व्यक्त किया गया, और बच्चों को गिफ्ट भी दिए गए।

आध्यात्मिक वैज्ञानिक जीवन का निर्माण करता है जीवन विज्ञान

उदयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमणजली की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी की सहवर्ती साध्वी विनम्रयशाजी एवं साध्वी कुमुदप्रभाजी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन विज्ञान दिवस का कार्यक्रम दिगंबर जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में समायोजित हुआ। साध्वी विनम्रयशाजी ने विद्यार्थियों को उद्बोधित करते हुए कहा कि अनुशासन जीवन विकास का सोपान है, सुखी जीवन की चाबी है, सफलता पाने का फार्मूला है। जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है, आध्यत्मिक वैज्ञानिक जीवन का निर्माण करता है। बच्चे एकलव्य जैसे गुरु निष्ठ बनें, श्रवण कुमार जैसे माता-पिता के भक्त बनें, अर्जुन जैसे एकाग्र बनें, मोबाइल में समय न खोयें। यही उत्तम से सर्वोत्तम बनने का समय है। साध्वी कुमुदप्रभाजी ने कहा कि अच्छी जीवनशैली जीने के लिए 'कम खाना, गम खाना और नम जाना' ये तीन बातें जो अपने जीवन में अपनाता है वो सफलता के शिखरों पर चढ़ता है।

संस्कारक और उपासक बनना बड़ी बात

डोम्बिवली। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में जैन संस्कारकों तथा उपासक-उपासिकाओं की कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि जैन संस्कारक और उपासक बनना बहुत बड़ी बात है। जब तक जैन संस्कारक और उपासक तैयार नहीं होंगे तो धर्म का प्रचार कैसे होगा। आचार्य श्री तुलसी ने जो प्रारंभ किया और श्रावक-श्राविकाओं ने जिस श्रद्धा भक्ति से स्वीकार किया, उसी का सुफल है कि आज इसकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। सैकड़ों संस्कारक, उपासक तैयार हो गए फिर भी अभी और आवश्यकता महसूस हो रही है। संस्कारकों और उपासकों को राष्ट्रीय संयोजक डालमचंद नौलखा ने प्रशिक्षण दिया। मुमुक्षु भीखमचंद नखत ने भी दर्शन किए। मुनिश्री ने उनकी अनेक विशेषताओं से पूरी परिषद को परिचय करवाया और उपासक नौलखा के सुश्रम की प्रशंसा की।

संक्षिप्त खबर

नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान

चेन्नई। नवरात्रि के अवसर पर आंतरिक शक्ति जागरण और मानसिक शांति प्राप्त करने के उद्देश्य से मुनि हिमांशुकुमारजी द्वारा तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट, चेन्नई में नौ दिवसीय आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के बाद सभी ने तीर्थंकर प्रभु सीमंधर स्वामी की वंदना कर, उनके स्मरण से अनुष्ठान प्रारंभ किया। 'चंदेसु निम्मलयरा' आदि मंत्रों के जाप से सिद्ध बनने की भावना की गई। एक घंटे से अधिक चले इस अनुष्ठान के दौरान ध्यान साधना, विभिन्न विधियों से मंत्रोच्चार, नवकार मंत्र का जाप, आरोग्यवर्धक और चिंता हरण मंत्रों का जाप करवाया गया। इस दौरान सहभागी विशेष तपः साधना में संलग्न रहते हैं, यथायोग्य रात्रि भोजन का त्याग करते हैं और जमीकंद का सेवन नहीं करते हैं। तप प्रत्याख्यान के बाद मंगल पाठ के साथ सुबह का अनुष्ठान सम्पन्न हुआ।

श्रीडूंगरगढ़। 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में नवान्हिक अनुष्ठान सान्नद सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री ने कहा नवरात्रि के दिन शक्ति जागरण के लिए महत्वपूर्ण हैं। हमारे भीतर अनंत शक्ति है। जप, तप, मंत्रों के प्रयोग से चैतन्य का जागरण होता है, अध्यात्म चेतना जागृत होती है। आत्मा की चार शक्तियां है - ज्ञान, दर्शन, आनंद और वीर्य। शक्ति का स्रोत हमारी वाणी, मन और स्वास में है। इन नौ दिनों में हमने विधिवत तप-जप के साथ सामूहिक अनुष्ठान किया है। एकाग्रता, तन्मयता के साथ मंत्रों का प्रयोग किया है। हमारी प्राण शक्ति मजबूत बने, कार्य शक्ति विकसित हो, अतः लम्बे समय तक जप का प्रयोग करते रहें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

मानवीय एकता का प्रतीक है अणुव्रत

साउथ हावडा।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में, मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रथम दिन 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' के रूप में अणुव्रत समिति हावड़ा, कोलकाता द्वारा प्रेक्षा विहार में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा, 'आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत में उपासना गौण है और चरित्र की प्रधानता है। यह एक निर्विशेषण धर्म है। अणुव्रत मानवीय एकता का प्रतीक है, जिसका अर्थ है जीवन की न्यूनतम शुद्धि—छोटे-छोटे व्रत। अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक आंदोलन है, जिसे कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग, जाति, लिंग, रंग, या वर्ण से हो, अपना सकता है। मुनि श्री ने आगे कहा, 'दुनिया में नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं।

सम्प्रदाय बुरा नहीं होता, लेकिन जब 'मेरा ही सम्प्रदाय श्रेष्ठ है' जैसी मानसिकता आ जाती है, तभी समस्याओं का जन्म होता है। साम्प्रदायिक सौहार्द से देश में शांति का वातावरण निर्मित होता है। धर्म पत्र है, तो सम्प्रदाय लिफाफा; धर्म गूदा है, तो सम्प्रदाय छिलका। सम्प्रदाय का जन्म धर्म के प्रचार के लिए ही होता है, और सम्प्रदाय का महत्त्व हर युग में रहा है।'

उन्होंने सभी से आपस में सद्भावना बनाए रखने और प्रेम व सौहार्द का विकास करने का आह्वान किया। मुनि श्री ने कहा, 'हमें पापी से नहीं, पाप से घृणा करनी चाहिए। वैमनस्य, घृणा और नफरत से देश और समाज रसातल की ओर जाता है। सौहार्द होगा, तो विश्वास बढ़ेगा। मानवता के विकास के लिए साम्प्रदायिक सौहार्द जरूरी है।'

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने दिया। कलकत्ता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत मीडिया के संयोजक पंकज दुधोड़िया और अणुविभा के विशेष आमंत्रित सदस्य विकास दूगड़ भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन हावड़ा अणुव्रत समिति के मंत्री वीरेंद्र बोहरा ने किया, जबकि कार्यक्रम का संचालन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया।

प्रमोद भावना समारोह का आयोजन

अमराईवाडी।

साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में प्रमोद भावना समारोह का आयोजन किया गया। अमराईवाड़ी का लगभग ढाई सौ व्यक्तियों का गुरु दर्शनार्थ संघ श्री चरणों में पहुंचा एवं गुरुदेव से प्रार्थना की अधिक से अधिक समय अमराईवाड़ी में विराजने की कृपा कराएं। यह संघ स्व. सम्पतलाल पगारिया की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र प्रवीण व अशोक पगारिया द्वारा प्रायोजित था। इस अवसर पर साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा- तेरापंथ धर्म संघ ऐसा धर्म संघ है जहां चहुंमुखी विकास होता है। श्रावक समाज भी संघ समर्पित और जागरूक है। पिताजी द्वारा प्रदत्त संस्कारों की बदौलत है कि प्रवीण व अशोक भी गुरु भक्त, संघ भक्त व उदारमना श्रावक है। इनका पूरा परिवार संस्कारी परिवार है। ऐसे व्यक्तियों का गुणानुवाद कर हम भी अपने गुणों का विकास कर सकते हैं।

आज के इस प्रमोद भावना कार्यक्रम में दोनों भाइयों के प्रति यह मंगल कामना करती हूँ कि उत्तरोत्तर आपकी संघ सेवा की भावना बढ़ती रहे, आप संघ व संघपति के प्रति समर्पित बने रहें। तेरापंथ समाज द्वारा उत्साह से मनाये जाने वाले इस कार्यक्रम में पश्चिम अहमदाबाद से पधारी साध्वी सहजयशा जी के प्रति भी साध्वी काव्यलता जी ने प्रमोद भावना व्यक्त करते हुए गीत का संगान कर उनका स्वागत किया एवं साध्वी मधुस्मिताजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर साध्वी सहजयशाजी व साध्वी ज्योतियशा जी ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। सभा, युवक परिषद, महिला मंडल अमराईवाड़ी द्वारा पगारिया परिवार को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन प्रवीण पगारिया ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

वीतरागता की दिशा में...

रणजीत दूगड़ ने अपनी जिज्ञासाएं श्री चरणों में रखीं, जिन्हें आचार्य प्रवर ने समाहित किया। आचार्यश्री द्वारा दी गई आशीर्वाद रूपी वाणी को सभी देशों के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी भाषा में अनुवाद रूप में प्रस्तुत कर अपने लोगों तक प्रस्तुत किया। प्रेक्षाध्यान शिविर संबंधी कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमण जी ने किया। पद्मश्री कनुभाई टेलर ने अपने विचार साझा किए। पूज्यवर ने उन्हें आशीर्वचन देते हुए विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार भरने की प्रेरणा दी।

पूर्णतया परमार्थ को...

वर्तमान साध्वीप्रमुखाजी और साध्वीवर्या भी इसी संस्था से आई है। गुरुदेव तुलसी का विचार था कि दीक्षा से पहले शिक्षा, परीक्षा और समीक्षा होनी चाहिए। मुमुक्षु संख्या वृद्धि और गुणवत्ता वृद्धि का प्रयास होना चाहिए। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ये मुमुक्षु तेरापंथ के भविष्य हैं, और यहां से साधु बनने की नींव तैयार होती है। आपने बताया कि पहले यह संस्था अस्थायी थी, जो बाद में स्थायी हो गई। स्वयं साध्वीप्रमुखाजी ने भी छह वर्ष इस संस्था में रहकर ज्ञानार्जन किया था। मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह संस्था 75 वर्षों से निरंतर गतिमान है और यहां मुमुक्षु रूप में शिक्षण दिया जाता है। जो मोक्ष या कल्याण का इच्छुक है, उसके लिए चार गुण - लज्जा, दया, संयम और ब्रह्मचर्य - आवश्यक हैं। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि परम आनंद की प्राप्ति ही अध्यात्म की प्राप्ति है, और इसे प्राप्त करने के लिए संन्यास का मार्ग अपनाया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत में मुनि उदितकुमारजी ने दीपावली पर तेले करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के शुभारम्भ में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन, समणी ऋजुप्रज्ञाजी, मुमुक्षु अंजलि, मुमुक्षु वीनू और मुमुक्षु शेफाली ने अपने विचार व्यक्त किए। मुमुक्षु बहनों ने प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

भेद में छिपा अभेद

जैन आगमों में कहा गया है- मनःपर्यव ज्ञानी लाखों-करोड़ों वर्ष पूर्व के विचारों को पढ़ लेता है, जान लेता है। आकाश में भाषावर्गणा और मनोवर्गणा के पुद्गल बराबर बने रहते हैं, इसलिए उन्हें पढ़ा जा सकता है। व्यक्ति की आकृति को भी देखा जा सकता है। आजकल ऐसी विधियां भी आविष्कृत हो रही हैं।

आज का प्रसिद्ध शब्द है पीढ़ियों का अंतराल। एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी बदल जाती है। बदलती तो वह पीढ़ी भी है, किंतु दूसरी पीढ़ी में निश्चित बदलाव आ जाता है। रहन-सहन, खान-पान, चिंतन सबकुछ बदल जाता है।

महावीर का प्रसिद्ध सूत्र है-अग्र को समाप्त करना है और मूल को भी समाप्त करना है। केवल पत्तों और फूलों को समाप्त करने से काम नहीं चलेगा। जब तक हम जड़ की बात को नहीं समझेंगे, मूल बात समझ में नहीं आएगी।

महावीर ने कहा कि जब तक बुढ़ापा न आए, जब तक शरीर में रोग न आए, इन्द्रियां हीन न हों, तब तक धर्म करो। जब बुढ़ापा आ जाएगा, रोग से आक्रांत हो जाओगे, इन्द्रियां क्षीण हो जाएंगी तब कुछ नहीं होगा

एक असत्य है विसंवादन योग-कहना कुछ और करना कुछ। यह शायद सबसे बड़ा झूठ है, दुनिया को धोखा देना है। व्यक्ति बहुत बड़ी-बड़ी बातें बनाता है, लेकिन चलता है बिल्कुल दूसरी दिशा में। यह बहुत बड़ा धोखा है। जैन धर्म ने आचरण के साथ इस बात को जोड़ा-कथनी और करनी में संवादिता होनी चाहिए।

सत्य पर किसी का अधिकार नहीं होता। वह सबके लिए समान होता है। विचार का घरातल भी सबके लिए समान होता है। उसमें देश और काल कहीं व्यवधान नहीं बनते। किसी भी देश और किसी भी काल में सत्य का शोध करने वाले और उदात्त विचार करने वाले लोग जन्म लेते रहे हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

चिन्मय दीप है अणुव्रत

अहमदाबाद।

मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी एवं डॉ. मुनि मदनकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन शाहीबाग में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस का शुभारम्भ अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुआ। मंगलाचरण अणुव्रत समिति सदस्य छितरमल मेहता, लक्ष्मीपत बोथरा, ओमप्रकाश बाँठिया, दिनेश बागरेचा द्वारा किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग ने सांप्रदायिक सौहार्द पर अपने विचार व्यक्त किये। मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संप्रदाय होना अच्छी बात है पर सांप्रदायिकता बड़ी खतरनाक है। सबके प्रति हमें मैत्री, सौहार्द व समन्वय बढ़ाना चाहिए। मुनि डॉ. मदनकुमारजी ने कहा कि समाज को स्वस्थ बनाना अणुव्रत आंदोलन का ध्येय है। अणुव्रत संप्रदाय मुक्त धर्म है। देश के मूर्धन्य साहित्यकारों और राजनेताओं ने इसको अधिमान दिया है। हर व्यक्ति को अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। धन चला गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, पर चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। अणुव्रत एक प्रकार से चिन्मय दीप है। जैसे अध्यात्म, नैतिकता और उपासना तीनों ज़रूरी है, वैसे विकास के लिए शांति जरुरी है, और उसके लिये सांप्रदायिक सौहार्द जरुरी है। अणुव्रत की बात जन-जन तक पहुँचे यह आज के युग की माँग है। आभार लक्ष्मीपत बोथरा ने किया।

मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति की साधना है दीक्षा : आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाजी के दीक्षा दिवस पर आचार्यश्री ने प्रदान किया मंगल आशीष

सूरत।
23 अक्टूबर, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि पुनर्जन्मवाद धार्मिक जगत का एक सिद्धांत है। आत्मा का पुनर्जन्म हुआ भी है और पुनर्जन्म होता भी रहेगा, जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेती। कई लोगों को पूर्वजन्म की जानकारी भी हो जाती है। जाति-स्मृति ज्ञान का एक सिद्धांत है, जो मतिज्ञान का एक प्रकार है। जाति-स्मृति ज्ञान का अर्थ है, पिछले जन्म का ज्ञान। इसमें एक नहीं बल्कि अनेक जन्मों का ज्ञान होता है।

पुनर्जन्म कहाँ होगा, यह बहुत कम लोग बता पाते हैं, क्योंकि जो घटित हो चुका है, उसकी स्मृति हो सकती है, लेकिन जो हुआ ही नहीं है, उसकी स्मृति होना मुश्किल है। अगर अवधिज्ञान जैसे विशेष ज्ञान का अर्जन हो जाए तो यह ज्ञात किया जा सकता है।

'आयारो' में बताया गया है कि बार-बार जन्म कौन लेता है? इसमें दो बातें बताई गई हैं- मायावी और प्रमादी व्यक्ति बार-बार जन्म लेता है। भीतर में कर्म और कषाय के कारण जन्म-मरण की परंपरा चलती रहती है। धर्म की साधना का उद्देश्य है अमरत्व की प्राप्ति करना, अर्थात् ऐसी स्थिति प्राप्त करना जिसमें न जन्म हो, न मृत्यु, न राग हो, न द्वेष, न शरीर हो, न वाणी और न ही मन। आत्मा की शुद्ध स्थिति प्राप्त होती है। जब तक व्यक्ति मन के घेरे में है, तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

सिद्ध आत्माएं अमर होती हैं। सिद्धों का पुनर्जन्म नहीं होता। वे शाश्वत काल के लिए शुद्ध हो जाते हैं। यदि सिद्ध भगवान को ईश्वर मान लें तो भी उनका अवतार नहीं होता, क्योंकि वे सदा शुद्ध रहते हैं। प्रमाद भी मोह-ग्रस्त आत्मा में ही होता है। माया करने वाला, छल-कपट में फंसा हुआ, प्रमादी और कषाय-ग्रस्त व्यक्ति ही बार-बार जन्म-मरण के चक्र में फँसता है। भगवान महावीर की आत्मा ने भी अनंत-अनंत जन्म-मरण किए थे। हमारी आत्मा ने भी अनंत-अनंत जन्म-मरण किए होंगे, लेकिन अब प्रयास करें कि ज्यादा जन्म लेना न पड़े। असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने का प्रयास करें।

साधुपन की साधना, मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति की साधना होती है। आज साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का दीक्षा दिवस है। आज से 32 वर्ष पूर्व उन्होंने समणी से साध्वी दीक्षा ली थी। कल साध्वीवर्या का दीक्षा दिवस था और आज साध्वीप्रमुखाजी का दीक्षा दिवस है। यह दीक्षा मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने की साधना है। हमें माया और छल-कपट से जितना हो सके बचने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ भी इनसे बचने का अधिकाधिक प्रयास करें। सरलता और सच्चाई के मार्ग पर चलें, क्योंकि सच्चाई की साधना के लिए सरलता आवश्यक है। सरल आत्मा की जन्म-मरण की परंपरा कम हो सकती है।

अगर अच्छा कुल मिलता है, धर्म का वातावरण होता है और साधु बनने का अवसर मिलता है, तो आत्मा कल्याण की ओर अग्रसर हो सकती है। धर्म भी दो प्रकार का होता है – कालबद्ध और कालातीत। गृहस्थ जीवन में दोनों प्रकार के धर्म का समावेश होना चाहिए। संसार में सम्यकत्व और चारित्र से बढ़कर कुछ नहीं है। ये दो अनमोल रत्न हैं और इनके सामने भौतिक वस्तुएँ तुच्छ हैं। सम्यकत्व और संयम रूपी रत्न सुरक्षित रहें। हमें माया और प्रमाद से बचते हुए जन्म-मरण की परंपरा से मुक्ति का प्रयास करना चाहिए।

पूर्व न्यायाधीश डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने अपनी 311वीं पुस्तक पूज्यवर को समर्पित कर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी ने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

हिंसा और प्रमाद बनाते हैं व्यक्ति को दुःखी : आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीवर्याजी के दीक्षा दिवस पर आचार्यश्री ने प्रदान किया मंगल आशीष

सूरत।
22 अक्टूबर, 2024

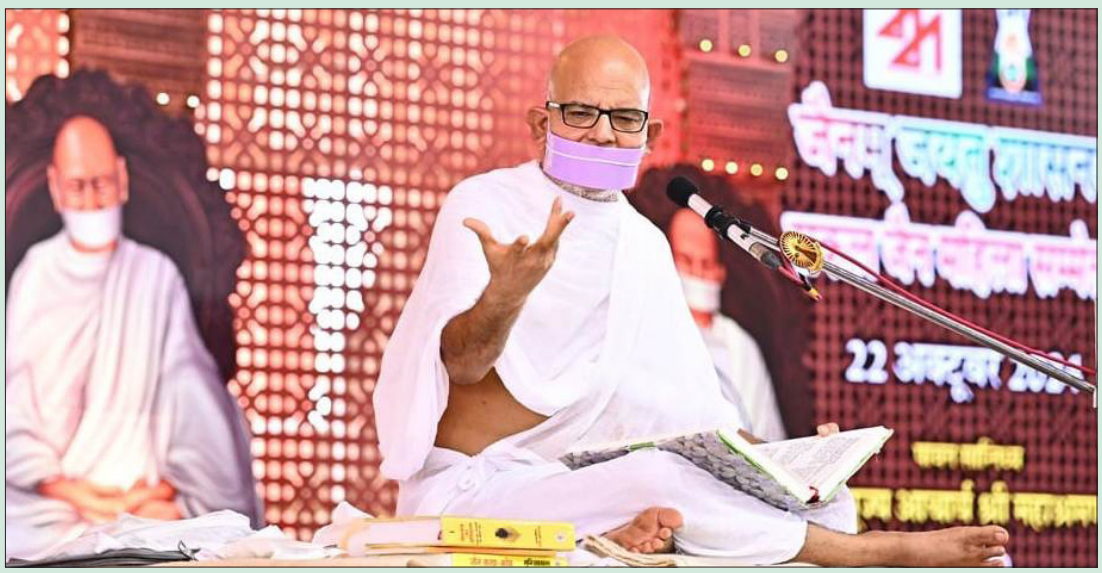

धर्म दिवाकर महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए फ़रमाया - हमारी दुनिया में दुःख का अनुभव देखने को मिलता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक दुःख हो सकते हैं, जैसे पारिवारिक, आर्थिक, शारीरिक और मानसिक समस्याएँ। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसके जीवन में कष्ट न आया हो। दुःख में भी विभिन्नता हो सकती है।

दुःख की उत्पत्ति असंयम से होती है। असंयम अर्थात् हिंसा आदि से उत्पन्न प्रवृत्तियाँ। प्रवृत्तियों के पीछे वृत्तियाँ होती हैं, जैसे कि राग-द्वेष रूपी वृत्ति। किसी के मन में पहले युद्ध उत्पन्न होता है, फिर वह कर्म में बदलता है। इसलिए हिंसा और प्रमाद व्यक्ति को दुःखी बना सकते हैं। दुःख असंयम से ही पैदा होते हैं। इन्द्रियों और वाणी के असंयम से भी दुःख उत्पन्न हो सकता है। मन और शरीर का असंयम भी दुःख का कारण बन सकता है। किसी पर हँसना या मजाक उड़ाना भी दुःख का कारण हो सकता है। व्यक्ति को असंयम से बचना चाहिए तथा मन, वाणी, शरीर और इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिए। ''संयम खलु जीवनम्'' अर्थात संयम ही जीवन है। गृहस्थों को भी झूठ, चोरी आदि से बचने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्या ने आज के दिन संयम में प्रवृत्त होकर चारित्र रत्न को जसोल में प्राप्त किया था। सम्यकत्व और चारित्र जिसे प्राप्त हो जाते हैं, वह महान धनवान बन जाता है। ये दोनों भव-भव के दुःख को दूर करने वाले कल्याणकारी हैं।

पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए, जिसमें महेन्द्र गेलड़ा ने इस चतुर्मास में दूसरे मासखमण तप का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

तेरापंथ महिला मंडल, सूरत द्वारा 'जैनम जयतु शासनम्' कार्यक्रम के अंतर्गत जैन महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। पूज्यवर ने फ़रमाया कि जैन शासन में तीर्थंकर का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। वे शासन के महानायक होते हैं। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी काल के अंतिम तीर्थंकर थे। तीर्थ के चार स्तम्भ हैं – साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। जैन शासन में विभिन्न सम्प्रदाय हैं। प्रत्येक का अपना सिद्धांत और मान्यता है। इन भेदों में भी अभेद को देखना चाहिए। नमस्कार महामंत्र, महाव्रत, गुणस्थान और तत्वार्थ सूत्र सभी में मान्य हैं। भक्तामर में भी जैन एकता दिखाई देती है। भले ही भेद हों, परन्तु मूल मैत्रीभाव रहना चाहिए।

तत्वज्ञान, धार्मिकता और संस्कार सभी में वृद्धि होनी चाहिए। महिलाएँ बच्चों को संस्कारी बनाएँ, मांसाहार से परिवार को बचाएँ। स्वयं का भी विकास करें और शिक्षा का प्रसार करें। महिलाओं में अनेक व्यवस्थात्मक क्षमताएँ होती हैं, जिनका विकास होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों की वर्तमान में प्रासंगिकता पर प्रेरणा प्रदान की।

तेरापंथ महिला मंडल, सूरत ने मंगलाचरण किया। मंडल अध्यक्षा चंदा भोगर ने स्वागत स्वर प्रकट किए। विभिन्न जैन महिला मंडलों की बहनें इस सम्मेलन में उपस्थित हुईं। इस संदर्भ में तेरापंथ महिला मण्डल-सूरत की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती मधु देरासरिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 नवम्बर-10 नवम्बर, 2024

आसक्ति के बिना अच्छे भाव से किया गया पुरुषार्थ होता है उत्तम : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
24 अक्टूबर, 2024

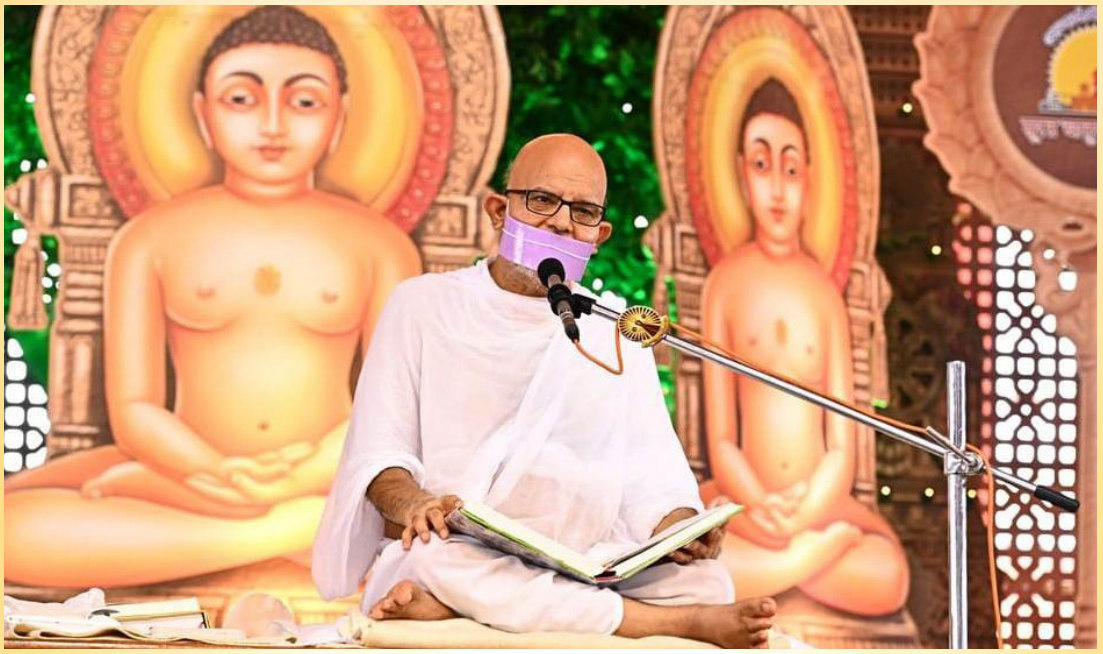

ज्ञान चेतना के स्रोत आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए कहा कि आत्मा की दो अवस्थाएँ होती हैं - एक सकर्म अवस्था और दूसरी अकर्म अवस्था। सम्पूर्ण अकर्म अवस्था में सिद्ध भगवान होते हैं, क्योंकि उनमें आठों कर्मों में से कोई भी कर्म नहीं जुड़ा होता। बाकी आत्माओं में आंशिक अकर्म अवस्था होती है, जो तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान पर होती हैं। इन गुणस्थानों में केवलज्ञानी आत्माओं के चार घाती कर्म समाप्त हो जाते हैं, जबकि अघाती कर्म शेष रहते हैं।

केवलज्ञानी मनुष्य जहाँ अकर्म अवस्था में होते हैं, वहीं दूसरी ओर अघाती कर्मों की दृष्टि से वे सकर्मा भी होते हैं। बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म समाप्त हो जाता है। मोहनीय कर्म के अभाव के कारण बारहवें गुणस्थान की आत्मा एक सीमा तक अकर्मा होती है। इस प्रकार, अकर्म अवस्था को तीन रूपों में देखा जा सकता हैः सिद्ध भगवान पूर्णतया अकर्मा, तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान वाले केवली जीव चार घाती कर्मों की दृष्टि से अकर्मा, और बारहवें गुणस्थान वाले जीव मोहनीय कर्म की दृष्टि से अकर्मा होते हैं।

कर्म शब्द का दूसरा अर्थ है - प्रवृत्ति, पुरुषार्थ। वह भी कर्म है। पुरुषार्थ करना उत्तम होता है, पर हमें अपुरुषार्थ तक पहुँचना चाहिए। पुरुषार्थ एक रास्ता है, जो अपुरुषार्थ की ओर ले जाता है। चौदहवें गुणस्थान वाले पूर्णतया अकर्मा होते हैं। उनके योगों में कोई प्रवृत्ति नहीं होती, वे अप्रयत्न और अपुरुषार्थी होते हैं। केवली दो प्रकार के होते हैं - सयोगी केवली और अयोगी केवली।

यदि कुछ प्राप्त करना है तो उत्थान, पुरुषार्थ, कर्म और वीर्य से प्रयास करना चाहिए। निढाल होकर आलसी नहीं बनना चाहिए। पुरुषार्थ से ही अपुरुषार्थ की स्थिति प्राप्त होती है। कर्म वर्गणा के पुद्गल आत्मा से चिपके होते हैं। व्यक्ति को निष्काम कर्म करना चाहिए, अर्थात आत्मशुद्धि के लिए कर्म करना। निर्जरा के दो भेद होते हैं - सकाम निर्जरा और अकाम निर्जरा। अकाम निर्जरा सकाम निर्जरा की अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ होती है। आसक्ति के बिना अच्छे भाव से किया गया पुरुषार्थ उत्तम होता है।

जो अकर्म युक्त है, उसके लिए कोई व्यवहार नहीं है। उनके लिए कोई नाम-संज्ञा नहीं है। जो जिस आसन में सिद्ध होता है, उसकी आत्मा उसी रूप में सिद्धलोक में स्थित हो जाती है।

पूज्यप्रवर ने प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि मुमुक्षु और वैरागी भाई-बहनों को चौविहार करने, ध्यान करने, नाश्ते से पहले माला फेरने का पुरुषार्थ करना चाहिए। संस्कृत व्याकरण का भी ज्ञान करें और इसे कंठस्थ करें। जब ज्ञान का चिंतन होता रहता है, तो वह सुरक्षित रहता है। कुछ प्रयास करेंगे, तभी कुछ प्राप्त कर पाएंगे।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि जो मनुष्य ज्ञान से अज्ञान की ओर और प्रकाश से अंधकार की ओर जाता है, उसका सोना ही उचित है। सुख-शय्या में सोना भी विकास की प्राप्ति का मार्ग हो सकता है। जैसे-जैसे अपेक्षाएँ बढ़ती हैं, व्यक्ति आनंद की राह से भटक जाता है। इच्छाओं का सीमाकरण करें। सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए इस भौतिक जगत से मन को मोड़ना होगा। आंतरिक आनंद प्राप्त करने के लिए चार सुख-शय्याएँ बताई गई हैं - निग्रन्थ प्रवचन में दृढ़ श्रद्धा, जो प्राप्त है उसमें संतोष करना, इन्द्रिय विषयों के प्रति अनासक्ति का भाव और वेदना में समता भाव रखना। हमें ऐसी सुख-शय्या पर सोना चाहिए और इन जागरूकता के सूत्रों को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

लोंगोवाल यूनिवर्सिटी, पंजाब के प्रोफेसर प्रदीप जैन ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।